आख़िरी खेल

नोवल-पुरस्कार विजेता

सैमुअल बैकेट

का

हिन्दी मे दूसरा नाटक

गॉडो के इन्तजार में

भी

प्रकाशकों से उपलब्ध है।

आख़िरी खेल

एक नाटक

सैमुअल बैकेट

अनुवादक
कृष्ण बलदेव वैद

राधाकृष्ण प्रकाशन

मूल्य
७ रुपये ५० पैसे

प्रकाशक
अरविन्दकुमार
राधाकृष्ण प्रकाशन
२ अन्सारी रोड, दरियागंज
दिल्ली-६

मुद्रक
छाया प्रिंटिंग प्रेस, दिल्ली-३२

आखिरी खेल

पात्र

नैग
नेल
हैम
क्लोव

[नंगी दीवारें।

फीकी बुझी-बुझी-सी रौशनी।

पीछे की दीवार में दाएँ-बाएँ, ऊँचाई पर दो छोटी-छोटी खिड़कियाँ, पर्दों से ढंकी हुई। सामने दाएँ को एक दरवाजा। दरवाज़े के पास दीवार से मुंह सटाये एक तसवीर। सामने चादर से ढंके, साथ-साथ लगे, कूड़े के दो ड्रम। दरमियान में एक पुरानी चादर-बिछी पहियेदार आरामकुरसी, जिसमें हैम बैठा हुआ है। दरवाज़े के पास अचल खड़ा क्लोव, जिसकी निगाहें हैम पर जमी हुई हैं। क्लोव का चेहरा लाल है। पर्दा उठने पर कुछ देर के लिए खामोशी।

क्लोव चलकर बाईं खिड़की के नीचे खड़ा हो जाता है। उसकी चाल अकड़ी और उखड़ी-उखड़ी है। बाईं खिड़की की तरफ आँख उठाकर देखता है। फिर मुड़कर दाईं की तरफ। चलकर दाईं खिड़की के नीचे खड़ा हो जाता है। दाईं खिड़की की तरफ आँख उठाकर देखता है फिर बाईं की तरफ। थोड़ी देर के लिए कमरे से बाहर जाता है। एक छोटी सीढ़ी उठाये लौटता है। उसे लेजाकर बाईं खिड़की के नीचे रख देता है।

चढ़कर पर्दा हटाता है। नीचे उतरकर करीब छह क़दम नापकर दाईं खिड़की की तरफ बढ़ता है, फिर सीढ़ी के लिए वापस लौटता है, उसे उठा ले जाकर दाईं खिड़की के नीचे रख देता है। ऊपर चढ़कर पर्दा हटाता है। नीचे उतरता है, तीन क़दम बाईं खिड़की की तरफ़ मापता है, सीढ़ी के लिए वापस लौटता है, उसे लेजाकर बाईं खिड़की के नीचे जमा देता है, उनपर चढ़कर खिड़की के बाहर झाँकता है। संक्षिप्त हंसी। नीचे उतरता है। दाईं खिड़की की तरफ एक क़दम बढ़ता है, सीढ़ी के लिए वापस लौटता है, उसे उठा ले जाकर दाईं खिड़की के नीचे जमा देता है। ऊपर चढ़कर खिड़की से बाहर झाँकता है। संक्षिप्त हंसी। नीचे उतरता है। सीढ़ी उठाकर कूड़े के ड्रमों की तरफ ले आता है, रुकता है, मुड़ता है, फिर सीढ़ी उठा ले जाकर दाईं खिड़की के नीचे रख देता है। ड्रमों की तरफ जाता है। उन पर से चादर हटाकर, तह करके उसे बाज़ू पर डाल लेता है। एक ड्रम का ढकना उठाता है, झुककर ड्रम में झाँकता है। संक्षिप्त हंसी। ढकना फिर रख देता है। दूसरे ड्रम के पास जाकर यही हरकत दुहराता है। हैम के पास जाता है, और उस पर पड़ी चादर को हटाकर उसे तह करके अपनी बाज़ू पर डाल लेता है। हैम ड्रेसिंग गाउन पहने है। सिर पर एक अकड़ी हुई टोपी, चेहरे पर ख़ून के छींटों से भरा एक बड़ा-सा रूमाल, गले से लटकती हुई एक सीटी, घुटनों पर कम्बल, पाँव में मोटी जुराबें। हैम शायद सो रहा है। क्लोव उस पर नज़र दौड़ाता है। संक्षिप्त हंसी। दरवाज़े की तरफ़ जाता है, रुकता है, फिर हाल की तरफ़ रुख़ कर लेता है।]

क्लोव : (टकटकी बाँधकर कोरी स्वरहीन आवाज़ में) ख़तम।

सब खतम। क़रीब-करीब। शायद।

[खामोशी]

एक ज़र्रे के ऊपर दूसरा, फिर तीसरा, हत्ताकि एक दिन अचानक एक ढेर। छोटा-सा। नामुमकिन-सा। ढेर।

[खामोशी]

मुझसे अब और नहीं सहा जायेगा।

[खामोशी]

अब मैं बावर्चीखाने में जा रहा हूँ। दस फुट लम्बा, दस फ़ुट चौड़ा, दस फ़ुट ऊँचा। बावर्चीखाना जहाँ खड़ा मैं इसकी सीटी का इन्तज़ार करूँगा।

[खामोशी]

बढ़िया लम्बाई-चौड़ाई। मेज़ के सहारे खड़ा होकर दीवार को देखूंगा। और इसकी सीटी का इन्तज़ार करूँगा।

[एक लम्हे के लिए अचल रहता है, फिर बाहर चला जाता है। फ़ौरन वापस लौट आता है, सीढ़ी उठाकर ले जाता है। खामोशी। हैम जग गया है। रूमाल के नीचे जम्हाई लेता है। फिर रूमाल हटा देता है। खामोशी। हैम का चेहरा लाल और चश्मा काला।]

हैम : मेरी···(जम्हाई)···चाल!

[रूमाल को अपने सामने फैलाकर]

चहेता चीथड़ा!

(चश्मा उतारता है, आँखें पोंछता है, चेहरा पोंछता है, चश्मा फिर चढ़ा लेता है, रूमाल को तय करके, ड्रेसिंग गाउन की सामने वाली जेब में सजा लेता है। गला साफ़ करता है। अंगुलियों के पोरों को मिलाता है।)

हैम : मेरे दुख से भी···

[जम्हाई]

बड़ा कोई दुःख होगा ? जरूर रहा होगा। कभी। पिछले जमाने में। लेकिन आजकल ?

[खामोशी]

मेरा बाप !

[खामोशी]

मेरी माँ !

[खामोशी]

मेरा कुत्ता !

[खामोशी]

मैं यह मानता हूँ कि वे सब भी दुःख झेल रहे हैं, अपनी-अपनी हैसियत के मुताबिक। लेकिन क्या उनका दुःख मेरे दुःख की बराबरी कर सकता है ? हरगिज नहीं।

[खामोशी]

नहीं, प··· (जम्हाई) पक्की बात है। (गर्व से) जितना बड़ा आदमी उतना ही ज्यादा भरा-पूरा।

[खामोशी। बुझे लहजे में]

और उतना ही खाली भी।

[सूंघते हुए]

क्लोव !

[खामोशी]

नहीं। यानि मैं अकेला।

[खामोशी]

अजीब ख्वाब था ! अजीब जंगल !

[खामोशी]

बस अब और नहीं। अब खत्म हो जाने का वक्त

आ गया। यहाँ इस पनाह में भी।

[खामोशी]

लेकिन फिर भी डरता हूँ। खत्म हो जाने से। बस सीधी बात। मुझे अब खत्म हो जाना चाहिए। और मैं खत्म···(जम्हाई) हो जाने से डरता हूँ।

[जम्हाई]

मालिक तू ही है। मैं अब बहुत थक गया हूँ। बिस्तर में जा पड़ूँ तो शायद···।

[सीटी बजाता है। क्लोव तेज-तेज आता है। कुरसी के पास आकर रुक जाता है।]

गन्दी हवा छोड़ रहे हो।

[खामोशी]

अच्छा मुझे तैयार करो, मैं सोना चाहता हूँ।

क्लोव : अभी तो सोकर उठे हो।

हैम : तो क्या हुआ?

क्लोव : हर पाँच मिनट बाद मैं तुम्हे उठाता-सुलाता रहूँ? मुझे और काम भी तो है!

[खामोशी]

हैम : कभी तुमने मेरी आँखों में झांका है?

क्लोव : नहीं।

हैम : कभी ख्वाहिश भी नहीं हुई कि मुझे सोता देख चश्मा उताकर झांक लो?

क्लोव : उघाड़कर?

[खामोशी]

नही।

हैम : किसी दिन तुम्हें दिखाऊंगा।

[खामोशी]

लगता है बिल्कुल सफेद हो गई हैं।

[खामोशी]

वक़्त क्या है ?

क्लोव : वही जो हर रोज़ होता है।

हैम : (दाईं खिड़की की तरफ इशारा करते हुए) उधर देख चुके हो ?

क्लोव : हाँ।

हैम : तो ?

क्लोव : सिफर !

हैम : बारिश होगी।

क्लोव : बारिश नहीं होगी।

[खामोशी]

हैम : वैसे अब तुम्हारी तबियत कैसी है ?

क्लोव : कोई शिकायत नहीं।

हैम : यानि ठीक हो ?

क्लोव : (चिड़चिड़े लहजे में) कहा न कोई शिकायत नहीं।

हैम : मेरी अपनी कुछ अजीब-सी है।

[खामोशी]

क्लोव !

क्लोव : क्या है।

हैम : तुम ज़रूर तंग आ चुके होगे ?

क्लोव : हाँ। (खामोशी) किस बात से ?

हैम : इस···इस सबसे।

क्लोव : वह तो मैं कब से हूँ ! (खामोशी) लेकिन तुम ?

हैम : (बुझी आवाज़ में) तो फिर ठीक है। चलने दो जब तक चलता है।

क्लोव : शायद अब यह सब खत्म हो जाये।

[खामोशी]

ज़िन्दगी भर वही सवाल! वही जवाब!

हैम : मुझे तैयार करोगे?

[क्लोव उसी तरह खड़ा रहता है।]

चादर ले आओ, क्लोव।

[क्लोव खड़ा रहता है।]

क्लोव!

क्लोव : क्या है?

हैम : मैं तुमको खाने के लिए कुछ नहीं दूँगा।

क्लोव : तो मर जायेंगे। जान छूटेगी।

हैम : बस इतना कर दूँगा कि मरोगे भी नहीं और भूख भी नहीं मिटेगी।

क्लोव : तो नहीं मरेंगे। यह भी ठीक ही है।

[खामोशी]

चादर लाने जा रहा हूँ।

[दरवाज़े की तरफ़ बढ़ता है।]

हैम : ठहरो!

[क्लोव रुक जाता है।]

दिन भर में एक बिस्कुट मिला करेगा।

[खामोशी]

नहीं डेढ़।

[खामोशी]

तुम भाग क्यों नही जाते कहीं?

क्लोव : तुम मुझे निकाल क्यों नहीं देते?

हैम : तुम्हें निकाल दूँ तो रखूँ किसे?

क्लोव : भागकर जाऊँ कहाँ?

[खामोशी]

हैम : यानि तुम भागना चाहते हो ?

क्लोव : चाहता तो हूँ ।

हैम : यानि तुम मुझे प्यार नहीं करते ?

क्लोव : नहीं ।

हैम : पहले किया करते थे ?

क्लोव : हाँ, बहुत पहले ।

हैम : मैंने तुम्हें बहुत दुख दिया है ।

[खामोशी]

दिया है न ?

क्लोव : दुख की बात नहीं ।

हैम : (चकित होकर) यानि मैंने तुम्हें बहुत दु.ख नहीं दिया ?

क्लोव : ज़रूर दिया है !

हैम : (आश्वस्त होकर) तुमने तो मुझे डरा ही दिया था ।

[खामोशी । सर्द लहजे मे]

मुझे मुआफ कर दो ।

[खामोशी । ऊँची आवाज में]

मैंने कहा मुझे मुआफ कर दो ।

क्लोव : सुन लिया ।

[खामोशी]

आज और खून बहा कि नहीं ?

हैम : कल से कम ।

[खामोशी]

दर्द की दवा का वक्त हो गया ?

क्लोव : अभी नहीं ।

[खामोशी]

हैम : आँखों का हाल ?

क्लोव : बुरा।

हैम : टाँगों का ?

क्लोव : बुरा।

हैम : लेकिन चल-फिर तो सकते हो ?

क्लोव : हाँ।

हैम : (कड़ककर) तो फिर खड़े क्यों हो ?

[क्लोव पीछे की दीवार से माथा और हाथ टिकाकर खड़ा हो जाता है।]

हैम : अब कहाँ जा मरे ?

क्लोव : इधर।

हैम : इधर आओ !

[क्लोव आकर कुरसी के पास खड़ा हो जाता है।]

अब कहाँ हो ?

क्लोव : यह रहा।

हैम : तुम मुझे मार क्यों नहीं डालते ?

क्लोव : आल्मारी का ताला नहीं खोल सकता।

[खामोशी]

हैम : जाओ, जाकर साइकिल के पहिये खरीद लाओ !

क्लोव : पहिये सब खत्म।

हैम : तुम्हारी साइकिल क्या हुई ?

क्लोव : थी कहाँ ?

हैम : यह कैसे हो सकता है ?

क्लोव : जब साइकिलें अच्छी मिलती थीं तो मैं तुम्हारी मिन्नतें करता रहा, तुम्हारे पैर पड़ता रहा कि एक ले दो। तुमने हमेशा यही कहा, दफा हो जाओ। और अब साइकिलें भी खत्म।

हैम : और तुम्हारे वे दौरे ? जब तुम मेरे कंगालों की देख-भाल

के लिए जाया करते थे। क्या हमेशा पैदल ही जाते थे?

क्लोव : कभी-कभी घोड़े पर।

[एक ड्रम का ढकना जरा ऊपर को उठता है, और नैग के हाथ किनारे पर दिखाई देते हैं। फिर उसका चेहरा उभरता है। टोपी से ढँका बहुत सफेद चेहरा। नैग जम्हाई लेता है। सुनता है।]

क्लोव : अब मैं जा रहा हूँ। कई और काम हैं।

हैम : बावर्चीखाने मे?

क्लोव : हाँ।

हैम : बाहर चारों तरफ मौत है।

[खामोशी]

अच्छा तो अब दफा हो जाओ।

[क्लोव जाता है। खामोशी]

हैम : और गाड़ी घिसट रही है।

नैग : मेरा दलिया!

हैम : मरदूद!

नैग : मेरा दलिया!

हैम : उफ ये बुड्ढे! बेशर्म। पेट है कि कुआँ!

[सीटी बजाता है। क्लोव आता है। कुरसी के पास रुक जाता है।]

हैम : आ गये! तुम तो जा रहे थे?

क्लोव : अभी कहाँ।

नैग : मेरा दलिया!

हैम : उसे दलिया डाल दो।

क्लोव : दलिया खत्म!

हैम : (नैग से) सुन लिया, दलिया खतम! पैसा हजम!

नैग : मेरा दलिया! मेरा दलिया!

हैम : एक बिस्कुट ला दो उसे।

[क्लोव जाता है।]

हैम : बूढ़ा बदमाश ! ठूंठ कैसे हैं ?

नैग : तुम्हारी बला से !

[क्लोव एक बिस्कुट लिये दाखिल होता है।]

क्लोव : यह लो बिस्कुट।

[नैग को बिस्कुट देता है। नैग उसे टटोलता है, सूंघता है।]

नैग : (शिकायती लहजे में) क्या है यह ?

क्लोव : बिस्कुट।

नैग : (पहले की तरह) इतना सख़्त ! इसे चबायेगा मेरा बाप ?

हैम : बन्द कर दो इसे।

[क्लोव ढकने को दबाकर उसे बन्द कर देता है।]

क्लोव : (कुरसी के पास अपनी जगह पर वापस लौटते हुए) काश कि बूढ़े इतने अहमक़ न होते !

हैम : ड्रम के ऊपर बैठकर दबाओ।

क्लोव : तुम जानते हो मुझसे बैठा नहीं जाता।

हैम : ठीक। और मुझसे खड़ा नहीं हुआ जाता।

क्लोव : ठीक।

हैम : हर एक की अपनी ख़ासियत।

[ख़ामोशी]

कोई फ़ोन वग़ैरा ?

[ख़ामोशी]

अब हँसना भी बन्द कर दिया ?

क्लोव : (सोचकर) आज मन नहीं।

हैम : (सोचकर) मेरा भी नहीं। (ख़ामोशी) क्लोव !

क्लोव : हाँ।

हैम : कुदरत ने शायद हमें भुला दिया है !

क्लोव : *कुदरत है कहाँ ?*

हैम : कुदरत भी खत्म ? यह कैसे हो सकता है ?

क्लोव : अपने आस-पास तो सब खत्म है।

हैम : *लेकिन हम साँस लेते हैं। बदलते हैं। हमारे बाल झड़ते हैं।* और हमारे दाँत भी। और हमारी ताजगी ! हमारे आदर्श !

क्लोव : *तो फिर कहो कि कुदरत ने हमें नहीं भुलाया।*

हैम : लेकिन तुम तो कह रहे हो, कुदरत अब है ही नहीं।

क्लोव : (उदास लहजे में) हमारा सोचने का यह बेढंगा ढंग !

हैम : *जो बन पड़ता है कर रहे हैं।*

क्लोव : नहीं करना चाहिए।

[खामोशी]

हैम : *क्लोव, तुम आदमी बुरे नहीं।*

क्लोव : आपके कदमों की धूल !

[खामोशी]

हैम : *यह रफ्तार बहुत धीमी है।*

[खामोशी]

दर्द की दवा का वक्त हो गया ?

क्लोव : *अभी नहीं।*

[खामोशी]

अब मैं चला। मुझे और भी कई काम हैं।

हैम : बावर्चीखाने मे ?

क्लोव : हाँ।

हैम : क्या काम है, कुछ पता भी तो चले।

क्लोव : *दीवार को देखने का काम।*

हैम : दीवार ! और दीवार पर तुम्हें क्या लिखा दिखाई देता

है ? वही बाइबल की तहरीर ? या शायद नंगी तसवीरें?

क्लोव : अपनी बुझती हुई लौ।

हैम : बुझती हुई लौ ! लो, और सुन लो ! वह तो यहाँ से भी देख सकते हो। बुझती हुई लौ ! मुझे देखो, ग़ौर से। पता चल जाएगा कि लौ कैसे बुझती है।

[खामोशी]

क्लोव : इस तरह मजाक करते शर्म तो नहीं आती ?

[खामोशी]

हैम : (सर्द आवाज में) अच्छा मुआफ़ कर दो।

[खामोशी, ऊँची आवाज में]

कहा न मुआफ कर दो।

क्लोव : सुन लिया, बाबा।

[नैग के ड्रम का ढक्कन उठता है। उसके हाथ किनारे पर दिखाई देते हैं। फिर उसका सिर उभरता है। उसके मुँह में बिस्कुट है। वह सुन रहा है।]

हैम : वह जो बीज तुमने बोए थे, उग आये ?

क्लोव : नहीं।

हैम : अब पास कुरेदकर देखो, शायद फूट रहे हों।

क्लोव : पागल हो !

हैम : शायद अभी वक़्त नहीं हुआ।

क्लोव : अगर फूटने होते तो अब तक फूट चुके होते।

[कड़ककर]

वे कभी नहीं फूटेंगे।

[खामोशी। नैग बिस्कुट मुंह से निकालकर हाथ में पकड़ लेता है।]

हैम : रंग जम नहीं रहा।

[खामोशी]

लेकिन शाम को हमेशा यही हाल होता है। है न, क्लोव ?

क्लोव : हां, हमेशा।

हैम : शाम जो हर रोज़ आती है। है न क्लोव ?

क्लोव : हां। हर रोज़ !

हैम : (यातनाग्रस्त लहजे में) यह हो क्या रहा है ? बता सकते हो ?

क्लोव : जो होना चाहिए। वही। धीरे-धीरे।

[ख़ामोशी]

हैम : अच्छा तो अब दूर हो जाओ मेरी नजरों से।

[कुरसी से पीठ टिकाकर कुछ देर निश्चल खड़ा रहता है। नेल दूसरे ड्रम के ढक्कन को खटखटाता है। ख़ामोशी। और ज़ोर से खटखटाता है। ढक्कन ऊपर उठता है। नेल के हाथ किनारे पर दिखाई देते हैं। फिर उसका चेहरा उभरता है। झालरदार टोपी। चेहरे पर सफेदी पुती हुई है।]

[ख़ामोशी]

नेल : क्या बात है, मेरी जान !

[ख़ामोशी]

प्यार का वक़्त हो गया ?

नैग : सो रही थी ?

नेल : नहीं तो।

नैग : एक बोसा हो जाए।

नेल : कैसे।

नैग : कोशिश तो करो।

[उनके हाथ एक-दूसरे की तरफ़ बढ़ते हैं। छू नहीं सकते। वापस लौट जाते हैं।]

नेल : हर रोज़ यही तमाशा होता है।

[खामोशी]

नैग : मेरा वह दांत भड़ गया।

नेल : कब ?

नैग : कल तक तो था।

नेल : (मातमी लहजे में) कल !

[बहुत मुश्किल से एक-दूसरे की तरफ मुड़ते हैं।]

नैग : मैं दिखाई दे रहा हूँ कि नही ?

नेल : बहुत धुंधला। और मैं ?

नैग : क्या मतलब ?

नेल : मैं दिखाई दे रही हूँ कि नहीं ?

नैग : बहुत धुंधली।

नेल : चलो यह भी ठीक।

नैग : ऐसा नहीं कहते।

[खामोशी]

हमारी बीनाई भी गई।

नेल : हाँ।

[खामोशी। मुँह फेर लेते हैं।]

नैग : मेरी आवाज सुन सकती हो ?

नेल : हाँ। और मेरी तुम ?

नैग : हाँ।

[खामोशी]

यानी हम अभी बहरे नही हुए !

नेल : क्या नही हुए ?

नैग : बहरे।

नेल : हाँ।

[खामोशी]

और कुछ कहना है ?

नैग : वह दिन याद है जब…।

नेल : नहीं ।

नैग : वह एक्सिडेंट जिसमें हमारी टाँगें कटी थीं ?

[दोनों खूब खुलकर हंसते हैं ।]

नेल : तब हम कश्मीर में थे ।

[जरा दबकर हंसते हैं ।]

नैग : गुलमर्ग जा रहे थे ।

[और भी दबकर हंसते हैं ।]

ठंड तो नहीं लग रही मेरी जान ?

नेल : बहुत । तुम्हें ?

[खामोशी]

नैग : जैसे बर्फ में लगे हो । (खामोशी) अन्दर घुस जाना चाहती हो ?

नेल : हाँ ।

नैग : तो घुस जाओ । (नेल हिलती नहीं) घुस भी जाओ । देख क्या रही हो ?

नेल : बस यूं ही ।

[खामोशी]

नैग : तुम्हारा बुरादा बदला उसने ?

नेल : बुरादा ? नहीं । (खामोशी । दबी हुई आवाज में ।) कभी तो ठीक भी बोल दिया करो ।

नैग : अच्छा बाबा, रेत । क्या फर्क पड़ता है ।

नेल : क्यों नहीं पड़ता है ?

[खामोशी]

नैग : पहले तो बुरादा ही हुआ करता था ।

नेल : पहले !

नैग : और अब रेत है ।

[खामोशी]

साहिल की रेत।

[खामोशी। बेसब्री से।]

रेत जो वह साहिल से उठा लाता है।

नेल : हाँ, अब रेत है।

नैग : तो क्या बदल दी गई?

नेल : नहीं।

नैग : मेरी भी नहीं।

[खामोशी]

अब और नहीं सहा जाता।

[खामोशी। बिस्कुट उसकी तरफ़ बढ़ाते हुए]

लोगी थोडा-सा?

नेल : नहीं। (खामोशी) क्या है?

नैग : बिस्कुट। आधा बचाकर रखा है, तुम्हारे लिए।

[बिस्कुट को देखता है। गर्व से]

आधे से भी ज्यादा। करीब-करीब तीन-चौथाई। यह लो।

[बिस्कुट पेश करता है।]

नहीं?

[खामोशी]

तबीयत तो ठीक है?

हैम : (चिड़चिड़े लहजे में) चुप भी करोगे। नींद हराम कर दी है।

[खामोशी]

बोलना ही है तो धीमे बोलो।

[खामोशी]

नींद आ जाती तो शायद मिलाप हो जाता। जंगलों में। आकाश के नीचे। धरती पर। मैं इतना तेज दौड़ता कि

मुझे पकड़ न पाये।

[खामोशी]

शायद कोई धड़कन!

[खामोशी]

मेरे सिर में कुछ टपक रहा है। टप-टप!

[खामोशी]

जैसे दिल! सिर में दिल!

[खामोशी]

नैग : (धीमी आवाज में) सुन रही हो? उसका दिल उसके सिर में जा पहुँचा है।

[दबी हुई हँसी]

नेल : ऐसी बातों पर हँसते नहीं। न जाने क्यों तुम ऐसी बातों पर हँसते हो।

नैग : धीरे बोलो!

नेल : (उसी तरह ऊँची आवाज में) माना कि दुःख बहुत बेहूदा चीज है, लेकिन…

नैग : उफ़!

नेल : हाँ, हाँ, मैं ठीक कह रही हूँ। दुःख बहुत बेहूदा चीज है। और शुरू-शुरू में उस पर हँसी ही आती है। लेकिन बाद में हम आदी हो जाते हैं। उसी तरह जिस तरह कई बार सुने हुए बासी लतीफे के। लतीफा ठीक है, लेकिन बार-बार उसी लतीफे पर हँसा नहीं जा सकता।

[खामोशी]

और कुछ कहना है?

नैग : नहीं।

नेल : फिर न कहना!

[खामोशी]

अच्छा, तो मैं चली।

नैग : बिस्कुट नहीं लोगी ?

[खामोशी]

अच्छा तो बाद में सही।

[खामोशी]

तुम तो जा रही थीं ?

नेल : बस अब जाने ही वाली हूँ।

नैग : जाने से पहले थोड़ा खुजलाओगी नहीं ?

नेल : नहीं।

[खामोशी]

कहाँ ?

नैग : पीठ मे।

नेल : नही।

[खामोशी]

किनारे से क्यो नही रगड़ लेते ?

नैग : खुजली बहुत नीचे हो रही है।

नेल : नीचे कहाँ ?

नैग : नीचे वही, उस सूराख में।

[खामोशी]

कर दो ज़रूर।

[खामोशी]

जहाँ कल की थी।

नेल : (मातमी लहजे में) कल ?

नैग : तो नही करोगी ?

[खामोशी]

तो लाओ, मैं तुम्हें कर दूँ ?

[खामोशी]

फिर रोने लगी ?

नेल : कोशिश कर रही थी।

[खामोशी]

हैम : शायद कोई नाड़ी हो।

[खामोशी]

नैग : क्या कह रहा है ?

नेल : कह रहा है शायद कोई नाड़ी हो।

नैग : मतलब ?

[खामोशी]

शायद कुछ भी नहीं।

[खामोशी]

दरजी वाला लतीफा सुनोगी ?

नेल : नहीं।

[खामोशी]

उससे क्या होगा ?

नैग : दिल बहलावा।

नेल : इतना मजेदार तो नहीं।

नैग : सुनकर लोटपोट हो जाया करती थी। याद नहीं ?

[खामोशी]

पहली बार जब सुनाया था तो हँसते-हँसते दम निकल गया था, तुम्हारा। करीब-करीब।

नेल : हल लेक के किनारे !

[खामोशी]

अप्रैल की वह शाम !

[खामोशी]

अजीब है कि नहीं !

नैग : कौन-सी बात ?

नेल : कि हमने कभी डल लेक में किश्ती चलाई थी।

[ख़ामोशी]

अप्रैल की उस शाम को।

नैग : उससे एक दिन पहले हमारी सगाई हुई थी।

नेल : सगाई!

नैग : तुम्हारी उछल-कूद से किश्ती उलट सकती थी। क़ायदे से हमें उसी रोज डूब जाना चाहिये था।

नेल : मैं उछल-कूद रही थी क्योंकि मैं ख़ुश थी।

नैग : (नाराज होकर) झूठ। तुम मेरे लतीफ़े पर लोटपोट हो रही थीं। कहती है ख़ुश थी! क्या अब भी जब कभी सुनाता हूँ तुम्हे हँसी नहीं आती? बताओ? कहती है ख़ुश थी! ऊँह।

नेल : झील बहुत गहरी थी। साफ़! शफ़्फ़ाफ़! तै तक दिखाई देती थी।

नैग : लो सुनो अब। (क़िस्सा सुनाने वाले की-सी आवाज में) एक बार क्या हुआ कि एक अंग्रेज को नये साल की दावत पर कहीं जाना था और उसके पास कोई धारीदार पतलून नही थी। सो वह एक दरजी की दुकान पर पहुँचा। बोला मुझे एक धारीदार पतलून सिलवानी है, बहुत अरजण्ट। दरजी ने उसका नाप ले लिया और कहा—

[दरजी की आवाज में]

'बहुत अच्छा जनाब। चार दिन बाद पतलून आपको तैयार मिलेगी।' चार दिन बीत गये।

[दरजी की आवाज में]

'मुआफ़ कीजिए जनाब, मुझसे सीट में जरा-सी गलती हो गई। एक हफ़्ते बाद तशरीफ़ लाइये, पतलून आपको तैयार मिलेगी।' 'ठीक है, ठीक है' अंग्रेज बोला, 'सीट तंग

हो तो बहुत मुश्किल हो जाती है।' एक हफ़्ता बीत गया।

[दरज़ी की आवाज़ में]

'जनाब, मुझसे ज़रा आगे से बहुत गलती हो गई। दस दिन बाद तशरीफ लाइये, पतलून तैयार मिलेगी।' 'ठीक है, ठीक है,' अंग्रेज़ बोला, 'गलती करना तो इंसानी फ़र्ज़ है। पतलून आगे से तंग हो तो चलना मुश्किल हो जाता है।' दस दिन बीते।

[दरज़ी की आवाज़ में]

'मुआफ कीजिए जनाब, सामने के बटन ज़रा ठीक नहीं लगे, दो हफ्ते बाद तशरीफ लाइये, पतलून आपको तैयार मिलेगी।' 'ठीक है, ठीक है,' अंग्रेज बोला, 'सामने के बटन तो ठीक ही होने चाहियें, नहीं तो सब दिखायी देता रहेगा।'

[ख़ामोशी। अपनी आवाज़ में]

जमा नहीं। अब इस लतीफे में वह जान नहीं रही।

[ख़ामोशी। बुझे लहजे में]

न जाने क्यों!

(ख़ामोशी, फिर क़िस्सा सुनाने वाले की-सी आवाज़ में) किस्सा कोताह, उधर नये साल की घण्टियाँ बज रही थीं, और अबकी बार दरज़ी ने काज ख़राब कर डाले थे।

[अंग्रेज की आवाज़ में] 'तुम दरज़ी हो कि नमूना! छह दिनों में, सुन रहे हो, छह दिनों में उस ख़ुदा ने सुना है सारी दुनिया बना डाली थी, सारी दुनिया। मज़ाक नहीं! और तुम यह साली पतलून लिये बैठे हो तीन महीनों से!'

[दरज़ी की चौंकी हुई आवाज़ में]

'वह तो ठीक है जनाब, लेकिन उसकी बनाई हुई दुनिया पर निगाह डालिये और मेरी इस पतलून पर भी। जमीन-आसमान का फ़र्क दिखेगा आपको।'

[ख़ामोशी। नेल की तरफ देखता है, जिस पर कोई असर नहीं हुआ और जो अंधी आँखें उठाए टुकुर-टुकुर देख रही है। फुसफुसाता है, फिर फुसफुसाहट को बीच में काटकर अपना सिर नेल की तरफ बढ़ाता है और हंसने लगता है।]

हैम : ख़ामोश!

[नैग चौंककर हंसना बन्द कर लेता है।]

नेल : तैं तक सब दिखायी देती थी।

हैम : (झल्लाकर) मैंने कहा ख़ामोश! न जाने तुम कब खत्म होगे! (एकदम गरजकर) न जाने यह सब कब खत्म होगा?

[नैग ड्रम में जा छिपता है और ढक्कन ऊपर से बन्द कर लेता है। नेल नहीं हिलती। हैम दीवानों की तरह]

पहरेदार! पहरेदार! मेरी बादशाहत! पहरेदार!

[सीटी बजाता है। क्लोव दाखिल होता है।]

हटाओ यह कूड़ा। समुन्दर में फेंक आओ इन्हें!

[क्लोव ड्रमों के पास जाकर रुक जाता है।]

नेल : साफ़ शफ़्फ़ाफ पानी!

हैम : पानी? क्या बड़बड़ा रही है?

[क्लोव झुककर नेल की नब्ज देखता है।]

नेल : (क्लोव से) भाग जाओ!

[क्लोव उसकी कलाई छोड़कर उसे ड्रम में ढकेल कर ढकना बन्द कर देता है।]

क्लोव : (कुरसी के पास अपनी जगह पर लौटते हुए) उसकी नब्ज

बन्द हो गयी है।

हैम : बड़बड़ा क्या रही थी ?

क्लोव : कह रही थी, भाग जाओ, रेगिस्तान में।

हैम : हर बात में टाँग अड़ाती है ! और कुछ ?

क्लोव : नहीं।

हैम : कुछ तो कहा होगा ?

क्लोव : मैं समझा नही।

हैम : बन्द कर दिया ?

क्लोव : हाँ।

हैम : दोनो को ?

क्लोव : हाँ।

हैम : ढक्कनों में कील ठोक दो।

[क्लोव दरवाज़े की तरफ जाता है।]

अभी नही।

[क्लोव रुक जाता है।]

अब मेरा गुस्सा ठंडा हो गया। अब पेशाब करूँगा।

क्लोव : (फुरती से) रुको, मैं अभी बोतल लाया।

[दरवाज़े की तरफ लपकता है।]

हैम : अभी नहीं।

[क्लोव रुक जाता है।]

दर्द की दवा···।

क्लोव : (काटकर)···का वक़्त अभी नहीं हुआ।

[खामोशी]

अभी-अभी तो ताकत की दवा ली है। असर नहीं होगा।

हैम : सुबह लो तो फुरती, शाम को लो तो शान्ति ! या शायद इससे उलटा।

[खामोशी]

वह बूढ़ा डॉक्टर। वह भी खत्म हो चुका होगा।

क्लोव : वह बूढा नहीं था।

हैम : न नहीं। लेकिन खत्म तो हो चुका है न ?

क्लोव : और नहीं तो क्या !

[खामोशी]

हैम : अच्छा तो एक चक्कर ही काटा जाए।

[क्लोव कुरसी के पीछे जाकर उसे धकेलता है।]

इतना तेज नहीं !

[क्लोव धकेलता रहता है।]

दीवारों के साथ-साथ। और फिर वापस सेन्टर में।

[क्लोव धकेलता है।]

पहले मैं ठीक सेंटर मे ही था न ?

क्लोव : (धकेलते हुए) हां।

हैम : बाकायदा पहियों वाली कुरसी चाहिए। बड़े-बड़े पहियों वाली, साइकिल के-से पहियों वाली।

[खामोशी]

दीवारों के ऐन साथ-साथ चल रहे हो ?

क्लोव : (धकेलते हुए) हां।

हैम : (हाथ बढ़ाकर दीवार को छूना चाहता है।) झूठ। तुम झूठ भी बोलने लगे ?

क्लोव : (दीवार के और पास ले जाकर) अच्छा बाबा, यह लो !

हैम : रुक जाओ।

[क्लोव पीछे वाली दीवार के पास कुरसी रोक देता है। हैम सिर दीवार से टिका लेता है।]

हैम : मेरी प्यारी दीवार !

[खामोशी]

जिसके उस पार बेपनाह दोजख !

[खामोशी। कड़ककर]
और पास करो! और पास! बिलकुल साथ!

क्लोव : हाथ हटा लो।
(हैम हाथ हटा लेता है। क्लोव कुरसी को दीवार से टिका देता है।) अब ठीक है?
[हैम दीवार से कान लगाकर सुनता है।]

हैम : तुम भी सुनो।
[दीवार को ठोंककर]
सुन रहे हो? खोखली ईंटें!
[फिर ठोंकता है।]
सब की सब खोखली!
[खामोशी। सीधा होकर बैठ जाता है। गुस्से में।]
बस अब वापस।

क्लोव : चक्कर पूरा नहीं हुआ।

हैम : मैंने कहा वापस!
[क्लोव कुरसी को वापस सेन्टर में धकेल लाता है।]
ठीक सेन्टर मे आ गए?

क्लोव : हाँ।

हैम : ठीक सेन्टर मे?

क्लोव : नापकर देखूं?

हैम : नहीं, अन्दाज़न देखो।

क्लोव : (कुरसी को थोड़ा एक तरफ सरका कर) अब ठीक है।

हैम : यानि अन्दाज़न सेन्टर मे हूँ?

क्लोव : लगता तो यही है।

हैम : लगता-वगता नहीं। ठीक-ठीक देखो।

क्लोव : अभी फ़ीता लेकर आया।

हैम : फीता नहीं अन्दाजा लगाओ।

[क्लोव कुरसी को थोड़ा और सरकाता है।]

हैम : बिल्कुल सेन्टर में!

क्लोव : अब ठीक है।

[खामोशी]

हैम : मुझे लगता है बाईं तरफ़ ज्यादा हूं।

[क्लोव फिर कुरसी को सरकाता है।]

अब लगता है दाईं तरफ ज्यादा हूँ।

[क्लोव कुरसी को हिलाता है।]

अब शायद आगे को ज्यादा हूँ।

[क्लोव कुरसी को सरकाता है।]

अब शायद पीछे को ज्यादा हूँ।

[क्लोव कुरसी को सरकाता है।]

वहाँ पीछे क्यों खड़े हो? सिर पर सवार होकर!

[क्लोव पीछे से हट कर बग़ल में आ जाता है।]

क्लोव : अगर इसे मार डाला होता तो अपना मरना आसान हो जाता।

[खामोशी]

हैम : मौसम कैसा है?

क्लोव : जैसा हर रोज़ होता है।

हैम : ज़मीन की तरफ देखकर बताओ।

क्लोव : देख चुका।

हैम : शीशे मे से?

क्लोव : उसकी जरूरत नही।

हैम : मैं कह रहा हूँ शीशे में से देखो।

क्लोव : लेकर आया।

[जाता है।]

हैम : अभी रहने दो।

[क्लोव दूरबीन उठा लाया है।]

हैम : ले आया। (दाईं खिड़की की तरफ़ जाता है और सिर उठाकर उसे देखता है।) अब सीढ़ी चाहिए।

हैम : सीढ़ी क्यों? क्या तुम और सिकुड़ गए?

[क्लोव दूरबीन उठाए जाता है।]

बताओ। अगर यह ठीक है तो मारे गए।

[क्लोव सीढ़ी उठा लाया है, लेकिन दूरबीन भूल आया है।]

क्लोव : सीढ़ी ले आया हूँ।

[दाईं खिड़की के नीचे सीढ़ी रख देता है। ऊपर चढ़ता है। दूरबीन की याद करके नीचे उतर आता है।]

क्लोव : अब दूरबीन चाहिए।

[दरवाज़े की तरफ़ बढ़ता है।]

हैम : (कड़ककर) लेकिन वह तो तुम्हारे हाथ में थी।

क्लोव : (रुकता है, फिर कड़ककर) थी। अब नहीं है।

[जाता है।]

हैम : क्या मुसीबत है!

[क्लोव दूरबीन लिये आता है। खिड़की की तरफ़ जाता है।]

क्लोव अब सब ठीक हो गया।

(सीढ़ी पर चढ़ता है। दूरबीन तानता है, फिर उसे नीचे गिरा देता है।) यह मैंने जान-बूझकर किया।

[नीचे उतरकर दूरबीन उठा लेता है, और उसका रुख हाल की तरफ़ कर देता है।)

हजारों इन्सान मस्ती में हँस रहे हैं।

[खामोशी]

दूरबीन हो तो ऐसी। हर चीज चारगुनी नजर आती है।

[दूरबीन नीचे कर लेता है। फिर हैम की तरफ़ रुख फेरकर।]

अब क्या हँसी भी नहीं आती तुम्हें?

हैम : (सोचकर) नहीं।

क्लोव : (सोचकर) मुझे भी नहीं।

[सीढ़ी पर चढ़कर, दूरबीन से बाहर देखता है, उसे घुमाता है।]

क्लोव : उस तरफ सिफर!

[घुमाता है।]

उस तरफ़ भी सिफर!

[घुमाता है।]

उस तरफ़ भी सिफर!

हैम : किसी चीज में हरकत नहीं! सब···

क्लोव : सिफ़र···

हैम : (कड़क कर) बीच में बोलते हो!

(साधारण आवाज में) सब···सब···सब···

क्या है सब?

(कड़क कर) क्या है सब!

क्लोव : सब क्या है? एक लफ़्ज में? यही पूछ रहे हो न! तो एक मिनट रुको।

(दूरबीन में से बाहर देखता है। फिर उसे नीचे करके हैम की तरफ़ देखता है।)

लाशें!

[खामोशी]

चुप क्यों हो ? ख़ुश होना चाहिए !

[ख़ामोशी]

हैम : अब समुन्दर को देखकर बताओ।

क्लोव : वहाँ भी यही हाल होगा।

हैम : महासागर को देखकर बताओ।

[क्लोव नीचे उतरता है, बाईं खिड़की की तरफ कुछ कदम उठाता है, सीढ़ी के लिए वापस मुड़ता है, उसे उठा ले जाकर खिड़की के नीचे रख देता है, ऊपर चढ़ कर दूरबीन में से बाहर देखता है। काफ़ी देर देखता रहता है। चौंककर दूरबीन नीचे करता है, उसे ग़ौर से देखकर फिर बाहर की तरफ तान लेता है।]

क्लोव : हद हो गई है ! पहले कभी ऐसा नजारा नज़र नहीं आया !

हैम : (चिन्तित लहजे में) क्यों, क्या नज़र आया ! जहाज ! मछली ? धुआँ ?

क्लोव : (देखते हुए) रोशनी बिलकुल डूब गई !

हैम : (आराम की साँस लेकर) वह तो हम जानते ही थे।

क्लोव : (देखते हुए) पहले थोड़ी-सी थी।

हैम : नीचे की तरफ।

क्लोव : (देखते हुए) हाँ।

हैम : और अब ?

क्लोव : (देखते हुए) स···ब ख···त···म !

हैम : बगुले हैं ?

क्लोव : (देखते हुए) पागल हो ! बगुले !

हैम : और दूर उफक मे ? वहाँ भी कुछ नहीं ?

क्लोव : (दूरबीन नीचे कर लेता है। हैम की तरफ़ देखते हुए) ख़ुदा के बन्दे, उफक में अब क्या होगा ?

[खामोशी]

हैम : लहरें ! लहरों का क्या हाल है ?

क्लोव : लहरें ?

[दूरबीन लहरों की तरफ मोड़कर]

काली !

हैम : और सूरज ?

क्लोव : (देखते हुए) सिफर !

हैम : लेकिन अभी से ? फिर देखकर बताओ !

क्लोव : (देखते हुए) सूरज गया जहन्नुम में !

हैम : यानि रात हो गई ?

क्लोव : (देखते हुए) अभी नहीं।

हैम : तो फिर रंग कैसा है ?

क्लोव : (देखते हुए) फीका !

[दूरबीन नीचे कर लेता है। हैम की तरफ रुख फेरकर, ऊंची आवाज में]

फ़ीका !

[खामोशी। और ऊंची आवाज में]

फीका !

[खामोशी। नीचे उतरता है। हैम के पीछे जाकर उसके कान में कुछ कहता है।]

हैम : (चौंककर) फीका ! क्या कहा, फीका !

क्लोव : हल्का काला। एक सिरे से दूसरे सिरे तक !

हैम : बढ़ा-चढ़ाकर बता रहे हो ?

[खामोशी]

अब मेरे सिर पर क्यों सवार हो !

[क्लोव पीछे से हटकर बग़ल में आ खड़ा होता है।]

क्लोव : हर रोज के इस तमाशे से कोई फ़ायदा है ?

हैम : और नहीं तो वक़्त कटी ही सही। और फिर क्या मालूम किसी दिन क्या हो जाए!

[ख़ामोशी]

कल रात मसलन मैंने अपने सीने मे झाँककर देखा तो जानते हो क्या दिखाई दिया? एक नासूर!

क्लोव : वह तुम्हारा दिल था।

हैम : *नहीं हो सकता। उसमे हरकत थी।*

[ख़ामोशी। यातनाग्रस्त आवाज़ में]

क्लोव!

क्लोव : कहो।

हैम : यह हो क्या रहा है?

क्लोव : वही जो होना चाहिए! धीरे-धीरे!

[ख़ामोशी]

हैम : क्लोव!

क्लोव : (बेसबरी से) कुछ कहोगे भी!

हैम : यानि इस सबका, हमारा, कोई मतलब है!

क्लोव : मतलब? तुम्हारा और मेरा? (संक्षिप्त हँसी) पागल हो!

हैम : मैं सोचता हूँ···

[ख़ामोशी]

मैं सोचता हूँ मान लो कोई समझदार इन्सान वापस इस दुनिया मे आकर हमे देखे तो वह क्या सोचेगा?

[उस कल्पित समझदार इन्सान की आवाज़ में]

खूब! अब समझ मे आया! खूब! अब पता चला कि यह सब क्या है, क्यों है!

[क्लोव उबल पड़ता है। दूरबीन नीचे गिर जाती है। क्लोव दोनों हाथ से अपना पेट खुजला रहा है। हैम साधारण आवाज़ में]

इतनी दूर की न भी सोचें तो भी कभी-कभी मुझे ...
(जोर डालकर) यूँ लगता है कि इस सबका...कुछ मतलब तो होगा ही।

क्लोव : (यातनाग्रस्त आवाज में, खुजली जारी रखते हुए) मुझे पिस्सू काट रहा है।

हैम : पिस्सू ! यानि अभी पिस्सू बाक़ी है ?

क्लोव : कम से कम एक तो है। (खुजलाते हुए) हो सकता है जूँ हो।

हैम : (भिन्नाकर) लेकिन इससे तो आदमजात कहीं फिर से शुरू हो सकती है। जल्दी करो, जैसे भी हो, इसे पकड़कर कुचल डालो।

क्लोव : अभी दवा लाया !

[जाता है।]

हैम : पिस्सू ! मारे गए ! कैसा मनहूस दिन है !

[क्लोव एक छिड़काव करनेवाला डिब्बा लिये आता है।]

क्लोव : पिस्सूमार दवा ले आया हूँ।

हैम : तो बस मारो साले को।

[क्लोव पतलून ढीली करके अन्दर छिड़काव करता है। झाँककर देखता है। फिर अन्धाधुन्ध छिड़काव करने लगता है।]

क्लोव : हरामी का पिल्ला !

हैम : मरा कि नहीं।

क्लोव : लगता तो यही है।

[डिब्बा नीचे फेंककर पतलून ठीक करता है।]

अगर साला मरने का बहाना नहीं कर रहा तो।

हैम : ध्यान से देखो। कहीं अण्डे न दे रहा हो !

क्लोव : देख लिया। (खामोशी) वह तुम्हारा पेशाब क्या हुआ ?

हैम : कर रहा हूँ।

क्लोव : शाबाश ! शाबाश !

[खामोशी]

हैम : (जोश से) सुनो ! क्यों न भाग निकला जाए यहाँ से ! तुम किश्ती बनाना जानते ही हो। और लहरें हमें कहाँ ले जायेंगी, यहाँ से दूर, किसी दूसरी दुनिया मे !

क्लोव : तौबा, तौबा !

हैम : तो मैं अकेला ही चल दूंगा। तुम किश्ती तो बनाओ। अभी ! कल मैं हमेशा के लिए तुम्हे यहाँ छोड़कर...।

क्लोव : (दरवाज़े की तरफ़ लपकते हुए) तो मैं अभी काम शुरू कर देता हूँ।

हैम : ठहरो !

[क्लोव ठहर जाता है।]

क्या खयाल है ? शार्क तो नहीं होंगे ?

क्लोव : मैं क्या जानूं ? है तो ज़रूर होंगे।

[दरवाज़े की तरफ़ जाता है।]

हैम : ठहरो !

[क्लोव रुक जाता है।]

दर्द की दवा का वक़्त...

क्लोव : (कड़ककर) अभी नहीं हुआ !

[दरवाज़े की तरफ जाता है।]

हैम : ठहरो !

[क्लोव रुक जाता है।]

आँखो का क्या हाल है ?

क्लोव : बुरा।

हैम : लेकिन देख तो सकते हो।

बलोव : हाँ, अगर इसे ही देखना कहते हैं तो !

हैम : और टाँगों का ?

बलोव : बुरा।

हैम : लेकिन चल तो सकते हो ?

बलोव : हाँ, इधर से उधर, उधर से इधर।

हैम : मेरे इस घर में।

[खामोशी। अपनी भविष्यवाणी में रस लेते हुए]

वह दिन दूर नहीं जब तुम अन्धे हो जाओगे। मेरी तरह। खिज़ा में एक धब्बे की तरह बैठे दिखाई दोगे। अँधेरे में। मेरी तरह।

[खामोशी]

वह दिन दूर नहीं जब तुम अपने-आप से कहोगे...मैं अब बहुत थक गया हूँ, कहीं जाकर बैठ जाना चाहिए...और तुम कहीं जाकर बैठ जाओगे। फिर सोचोगे...मुझे भूख लग रही है, उठकर खाने का इन्तज़ाम करना चाहिए। लेकिन उठ नहीं पाओगे। सोचोगे...बैठना नहीं चाहिए था, लेकिन अब चूँकि बैठ गया हूँ, थोड़ी देर और बैठे रहना चाहिए, फिर उठकर खुद खाने का सामान इकट्ठा करूँगा। लेकिन उठ नहीं सकोगे। बैठे रहोगे और तुम्हारी भूख कभी नहीं मिटेगी।

[खामोशी]

कुछ देर दीवार को घूरते रहने के बाद सोचोगे...आँखें बन्द कर लूँ, थोड़ी नींद ठीक रहेगी, फिर ताकत आ जाएगी ...और तुम आँखें बंद कर लोगे। और जब दोबारा आँखें खुलेंगी तो सामने से दीवार गायब नज़र आएगी।

[खामोशी]

तुम अपने-आपको बेपनाह वीराने से घिरा हुआ पाओगे।

जमाने भर के जागे हुई लाशों से भी वह खिज़ा, वह शून्य, भर नहीं पाएगा, और उस सबके बीच तुम, जैसे सफ़ेद फैले हुए मैदान में एक मैला धब्बा !

[खामोशी]

याद रखो, वह दिन दूर नहीं, जब तुम्हें पता चलेगा कि हकीकत क्या है। तुम्हारी हालत बिलकुल वही होगी जो अब मेरी है। फ़र्क सिर्फ इतना होगा कि तुम निपट अकेले होगे, क्योंकि तुमने किसी पर रहम नहीं किया होगा और तुम्हारे रहम के लिए कोई होगा भी नहीं।

[खामोशी]

क्लोव : जरूरी नहीं कि ऐसा ही हो।

[खामोशी]

और तुम एक जरूरी बात भूल रहे हो।

हैम : वह कौनसी बात ?

क्लोव : कि मुझसे बैठा नहीं जाता।

हैम : (बेसबरी से) तो क्या हुआ ! लेटोगे तो सही। या फिर एक ही जगह जमकर खड़े रह जाओगे। जैसा कि अब। मतलब थककर रुक जाने से था। बैठने न बैठने से कोई फ़र्क नहीं पडेगा।

[खामोशी]

क्लोव : तो तुम सब यही चाहते हो कि मैं चला जाऊं ?

हैम : और नहीं तो क्या !

क्लोव : तो मैं जा रहा हूं।

हैम : लेकिन तुम जा नहीं सकते।

क्लोव : तो नहीं जाऊंगा।

[खामोशी]

हैम : तुम हमें खत्म क्यों नहीं कर डालते ?

[खामोशी]

आल्मारी खोलने का तरीका मैं बता सकता हूँ, इस शर्त पर कि सबसे पहले तुम मुझे खत्म करोगे।

क्लोव : यह मुझसे नहीं होगा।

हैम : तो न सही।

क्लोव : मैं जा रहा हूँ। मुझे और भी तो कई काम हैं।

हैम : वह दिन याद है जब तुम पहली बार यहाँ आये थे ?

क्लोव : नही। तुम ही तो कहते कि तब मैं बहुत छोटा था।

हैम : अपने बाप की याद है ?

क्लोव : (ऊबे हुए लहजे में) इसका जवाब भी वही है।

[खामोशी]

लाख बार यही सवाल पूछ चुके हो।

हैम : पूछे हुए सवालों को बार-बार पूछने में बहुत मजा है। (जोश से) पुराने सवाल, पुराने जवाब ! क्या बात है !

[खामोशी]

जानते हो। मैंने ही तुम्हारे बाप की जगह ली थी।

क्लोव : जानता हूँ।

[हैम की तरफ एकटक देखता है।]

तुमने ही मेरे बाप की जगह ली थी।

हैम : मेरा मकान तुम्हारा घर बना।

क्लोव : हाँ। (आसपास नजर डालते हुए) यह भी ठीक है।

हैम : (गर्व से) अगर मैं न होता (अपनी तरफ इशारा करते हुए) तो तुम्हारा कोई बाप न होता। अगर हैम न होता (आसपास इशारा करते हुए) तो तुम्हारा कोई 'होम' भी न होता।

[खामोशी]

क्लोव : मैं अब यहाँ नहीं रह सकता।

हैम : कभी एक बात पर ध्यान दिया है ?

क्लोव : कभी नहीं।

हैम : (अपनी बात जारी रखते हुए) कि इधर हम इस बिल में घुसे बैठे हैं...

[खामोशी]

और उधर पहाड़ियों के उस पार शायद अब भी बहार हो ? बोलो।

[खामोशी]

फूल ! पत्ते ! (झूमकर) हरियाली !

[खामोशी]

शायद तुम्हें ज्यादा दूर भी न जाना पड़े।

क्लोव : मैं ज्यादा दूर जा ही नहीं सकता।

[खामोशी]

लेकिन अब मैं यहां भी नहीं रह सकता।

हैम : मेरा कुत्ता पूरा हुआ ?

क्लोव : एक टांग बाकी है।

हैम : रेशमी है न ?

क्लोव : हां, है।

हैम : लाकर दिखाओ तो।

क्लोव : अभी एक टांग बाकी है।

हैम : तुम लाओ तो।

[क्लोव जाता है।]

गाड़ी घिसट ही रही है।

[क्लोव तीन टांग का एक काला कुत्ता एक टांग से लटकाए लाता है।

क्लोव : तुम्हारे दोनों कुत्ते हाजिर हैं।

[कुत्ता हैम को देता है। हैम उसे प्यार करता है।]

हैम : सफ़ेद है न ?

क्लोव : क़रीब-क़रीब।

हैम : क़रीब-क़रीब से क्या मतलब ? सफ़ेद है कि नहीं ?

क्लोव : नहीं।

[ख़ामोशी]

हैम : इसका वह कहाँ है ? शिवलिंग ?

क्लोव : *(झिल्लाकर) अभी पूरा कहाँ हुआ है। वह सबसे बाद में लगाया जाता है।*

हैम : *और पट्टा ?*

क्लोव : (तैश में आकर) कह तो दिया, अभी पूरा नहीं हुआ। पहले *पूरा किया जाता है, फिर पट्टा पहनाया जाता है।*

[ख़ामोशी]

हैम : खड़ा हो सकता है ?

क्लोव : मैं नहीं जानता।

हैम : करके देखो तो।

[कुत्ता क्लोव को देता है। वह उसे फ़र्श पर रख देता है।)

हुआ ?

क्लोव : ठहरो।

[नीचे बैठकर कुत्ते को तीन टाँगों पर खड़ा करने की कोशिश करता है। नहीं कर सकता है। छोड़ देता है। कुत्ता लुढ़क जाता है।]

हैम : (बेसब्री से) हुआ कि नहीं ?

क्लोव : हो गया।

हैम : (कुत्ते के लिए इधर-उधर हाथ फैलाकर) कहाँ ? कहाँ है ?

क्लोव : इधर।

[हैम का हाथ पकड़कर कुत्ते के सिर पर रख देता हूं।]

यह रहा।

हैम : (कुत्ते के सिर पर हाथ रखकर) मेरी तरफ़ देख रहा है?

क्लोव : हां।

हैम (गर्व से) मानो मुझसे कह रहा हो, घुमाने ले चलो!

क्लोव : यही समझ लो।

हैम : (गर्व से) या मानो मुझसे हड्डी मांग रहा हो।

[हाथ हटा लेता हूं।]

इस तरह खड़ा रहने दो। मेरी तरफ मुंह उठाए। प्रार्थना के 'पोज़' में।

क्लोव : मैं जा रहा हूं।

हैम : सब्ज़ बाग़ देख चुके?

क्लोव : हां। लेकिन कल से कम।

हैम : मां पेग की रोशनी जल रही है?

क्लोव : रोशनी? पागल हो?

हैम : यानि बुझ गई है?

क्लोव : और नहीं तो क्या? अगर जल नहीं रही तो मतलब बुझ चुकी है।

हैम : मैं मां पेग का पूछ रहा था।

क्लोव : मैं भी उसी का बता रहा था।

[खामोशी]

न जाने आज तुम्हे हो क्या रहा है?

हैम : मैं धीरे-धीरे चुक रहा हूं।

[खामोशी]

तो क्या उसे दफना दिया गया है?

क्लोव : लो और सुनो! दफनाएगा कौन?

हैम : तुम।

क्लोव : मैं! बस यही कसर बाकी थी।

हैम : लेकिन मुझे तो दफनाओगे?

क्लोव : नहीं। तुम्हें भी नहीं।

[खामोशी]

हैम : काफ़ी खूबसूरत हुआ करती थी। किसी ज़माने में माँ पेग जंगली फूल जैसी।

[चटखारा लेकर याद करता है।]

और खूब मर्दबाज भी।

क्लोव : हम भी तो काफ़ी खूबसूरत हुआ करते थे। किसी ज़माने में। कौन है जो काफ़ी खूबसूरत नहीं हुआ करता था? किसी ज़माने में?

[खामोशी]

हैम : जाओ, जाकर खूंटी या हुक ले आओ।

[क्लोव थोड़ी दूर दरवाजे की तरफ बढ़ता है। फिर रुककर।]

क्लोव : यह करो, वह करो। एक मिनट चैन नहीं। और मैं भी इनकार नहीं कर पाता। न जाने क्यों!

हैम : क्योंकि तुम कर नहीं सकते।

क्लोव : अब वह दिन दूर नहीं जब मैं साफ इनकार कर दिया करूंगा।

हैम : वह दिन भी दूर नहीं जब तुम कुछ भी नहीं कर सकोगे।

[क्लोव जाता है।]

लानत है ऐसे मरदूदों पर जिन्हें हर बात समझानी पड़े!

[क्लोव एक खूंटी उठाए दाखिल होता है।]

क्लोव : यह रही तुम्हारी खूंटी! चढ़ा लो अन्दर!

[खूंटी हैम को देता है। यह उसे चप्पू की तरह

चलाकर अपनी कुरसी को हिलाने की कोशिश करता है।]

हैम : कुछ हरकत हुई ?

क्लोव : नहीं।

[हैम खूँटी फेंक देता है।]

हैम : जाओ, तेल की कुप्पी ले आओ।

क्लोव : उसे क्या करोगे ?

हैम : पहियों में तेल दूंगा।

क्लोव : अभी कल तो दिया था।

हैम : कल ! क्या मतलब ? कल क्या ?

क्लोव : (कड़ककर) कल यानि वह नामुराद मनहूस दिन जो इस नामुराद मनहूस दिन से न जाने कितने सौ बरस पहले आया था। मैं वही लफ्ज इस्तेमाल कर रहा हूँ जो मैंने तुमसे सीखे हैं। और अगर उनका तुम्हारे लिए कोई मतलब नहीं रहा तो और सिखा दो या फिर मुझसे कुछ पूछो मत।

[खामोशी]

हैम : एक पागल से मेरी दोस्ती हुआ करती थी। किसी ज़माने मे। उसे वहम हो गया था कि कयामत आ चुकी है। वह पेन्टर था। खुदाई भी किया करता था। मैं उसे मिलने उसके पागलखाने में अक्सर जाता। उसका हाथ पकड़कर उसे खिड़की के पास ले जाकर कहता—देखो तो वह लहलहाते खेत ! और वे बादबान्। देखा, कितना दिलफ़रेब नजारा है !

[खामोशी]

वह हाथ खींचकर अपने कोने में जा दुबकता। उसे हमेशा चारों तरफ राख ही राख दिखाई देती थी।

[खामोशी]

उसे वहम था कि उसके सिवा बाकी सब खत्म हो चुके हैं।

[खामोशी]

और वह भी गलती से बचा रह गया है।

[खामोशी]

अब सोचता हूँ अकेला वही इस वहम का शिकार नहीं था।

क्लोव : पागल! किस जमाने की बात कर रहे हो!

हैम : मुद्दत हो गई। तुम अभी पैदा भी नहीं हुए थे।

क्लोव : खुदा वे दिन कभी न लौटाए!

[खामोशी]

[हैम अपनी टोपी जरा ऊपर उठाकर उसकी दुआ की ताईद करता है।]

हैम : मुझे वह पागल बहुत पसंद था।

[खामोशी। टोपी फिर पहन लेता है।]

पेन्टर था। और खुदाई भी किया करता था।

क्लोव : हजारों बीमारियाँ हैं। इस दुनिया में।

हैम : अब कहाँ! अब तो बहुत कम बची रह गई हैं।

[खामोशी]

क्लोव!

क्लोव : कहो।

हैम : अब और नहीं सहा जाता!

क्लोव : हाँ। (खामोशी) क्या नहीं सहा जाता?

हैम : यही...यही...सब!

क्लोव : मैं तो कब से यही चिल्ला रहा हूँ।

[खामोशी]

तुम अपनी कहो।

हैम : (उदास लहजे में) यह दिन भी दूसरे दिनों की ही तरह

बीत जाएगा !

क्लोव : और नहीं तो क्या !

[खामोशी]

ज़िन्दगी भर वही खुराफ़ात !

हैम : मैं तुम्हें छोड़कर कहीं नही जा सकता।

क्लोव : मैं जानता हूँ। लेकिन यह मत भूलो कि तुम मेरा पीछा नही कर सकते।

हैम : लेकिन मुझे मालूम कैसे होगा कि तुम जा चुके हो ?

क्लोव : (तेज़ी से) बस सीटी बजाने की देर है। अगर मैं भागा भागा न आऊँ तो मतलब मैं जा चुका हूँ।

[खामोशी]

हैम : यानि जाने से पहले एक अलविदाई बोसा भी नहीं दोगे ?

क्लोव : सवाल ही नहीं पैदा होता।

[खामोशी]

हैम : लेकिन यह भी तो हो सकता है कि तुम बावर्चीखाने में मरे पड़े हो ?

क्लोव : दोनो सूरतों मे नतीजा तो वही हुआ न !

हैम : लेकिन मुझे कैसे पता चलेगा कि तुम जा चुके हो या बावर्चीखाने में मरे पडे हो ?

क्लोव : कुछ दिन बाद लाश सड़ने लगेगी।

हैम : मुझे कैसे पता चलेगा कि वह लाश तुम्हारी है। चारों तरफ लाशो के ढेर हैं।

क्लोव : सारी कायनात् लाशों से अटी हुई है।

हैम : (नाराज़ होकर) कायनात् जाएँ भाड मे !

[खामोशी]

कुछ और कहो !

क्लोव : क्या कहूँ ?

हैम : कोई नया तरीका निकालो ! (कड़ककर) नया तरीका !

क्लोव : तो लो।

[हाथ पीछे बाँधकर नज़रें नीची किए टहलता है। फिर रुक जाता है।]

टाँगों का यह दर्द ! हद हो गई है ! सोचना भी मुश्किल होता जा रहा है !

हैम : मान क्यों नहीं लेते कि तुम कहीं भी नहीं जा सकते।

[क्लोव फिर टहलने लगता है।]

क्या कर रहे हो ?

क्लोव : कोई नया तरीका निकाल रहा हूँ।

(टहलता रहता है।)

निकल आया।

(रुक जाता है।)

हैम : क्या दिमाग पाया है ! (खामोशी) जरा सुनें तो ?

क्लोव : ठहरो !

[जैसे अपने सोचे हुए तरीके पर यकीन न आ रहा हो]

हाँ ठीक तो है...

[जैसे यकीन बढ़ गया हो।]

बिल्कुल ठीक !

[सिर उठाकर]

बस अलार्म लगा दूँगा।

[खामोशी]

हैम : अलार्म ! मैं समझा नहीं !

क्लोव : मान लो तुम सीटी बजाते हो, मैं नहीं आता। अगर अलार्म बज उठता है तो समझ लो मैं जा चुका। अगर नहीं बजता तो समझ लो मैं मर गया।

[ख़ामोशी]

हैम : काम करता है ?

[ख़ामोशी। बेसबरी से]

अलार्म काम करता है ?

क्लोव : करेगा क्यों नहीं ?

हैम : क्योंकि बहुत कर चुका है।

क्लोव : लेकिन हमने तो कभी चलाया भी नहीं।

हैम : (गुस्से में) इसीलिए तो।

क्लोव : अभी जाकर देखता हूं।

[क्लोव जाता है। अलार्म की घंटी। क्लोव अलार्म की घड़ी लिये दाख़िल होता है। हैम के कान से लगा कर अलार्म छोड़ देता है। दोनों उसे आख़िर तक सुनते हैं। ख़ामोशी]

इसे सुनकर तो मुर्दे भी जाग उठें ! तुम्हें सुनाई दिया ?

हैम : हां, लेकिन साफ़-साफ़ नहीं।

क्लोव : आख़िरी टुकड़ा तो कमाल का था।

हैम : मुझे बीच का ज्यादा पसंद आया।

[ख़ामोशी]

दर्द की दवा का वक़्त...।

क्लोव : अभी नहीं हुआ !

[दरवाज़े की तरफ़ जाता है। मुंह फेरकर]

मैं जा रहा हूं।

हैम : मेरी कहानी का वक़्त हो गया। सुनोगे ?

क्लोव : नहीं।

हैम : मेरे बाप से पूछो वह सुनेगा ?

[क्लोव ड्रमों के पास [illegible]। मेग के [illegible]

ढक्कना उठाता है। [illegible]]

सीधा होकर खड़ा हो जाता है।]

क्लोव : वह सो रहा है।

हैम : जगा दो।

[क्लोव नैग को अलामँ से जगा देता है। वह कुछ बड़बड़ाता है। क्लोव सीधा हो जाता है।]

क्लोव : कहता है नही !

हैम : कहो लॉली पॉप मिलेगा।

[क्लोव फिर झुकता है। पहले की तरह]

क्लोव : कहता है, टॉफी लूँगा।

हैम : कहो मिल जायेगी।

[क्लोव फिर झुकता है। पहले की तरह]

क्लोव : मान गया।

[क्लोव दरवाजे की तरफ़ जाता है। नैग के हाथ नमूदार होते हैं। फिर सिर उभरता है। क्लोव दरवाज़े पर पहुँचकर मुड़ता है।]

आने वाली ज़िन्दगी में यकीन है तुम्हे ?

हैम : मेरी तो सारी ज़िन्दगी ही 'आने वाली' रही है। (क्लोव जाता है।) लाजवाब कर दिया साले को !

नैग : कहानी कब शुरू करोगे ?

हैम : बूढा बदमाश ! बता सकते हो मुझे क्यो पैदा किया ?

नैग : नही जानता था।

हैम : क्या ? क्या नही जानते थे ?

नैग : कि तुम निकलोगे।

[खामोशी]

टॉफी दोगे कि नही ?

हैम : कहानी के बाद।

नैग : कसम खाते हो ?

हैम : हाँ।

नैग : किस चीज की ?

हैम : अपनी इज्जत की।

[ख़ामोशी। फिर दोनों ख़ूब खुलकर हँसते हैं।]

नैग : दो लूँगा।

हैम : एक मिलेगी।

नैग : एक मेरे लिए और एक...।

हैम : कह दिया एक !

[ख़ामोशी]

कहाँ तक पहुँचा था मैं ?

[ख़ामोशी। उदास लहजे में]

कहानी ख़त्म होने को है। हम भी।

[ख़ामोशी]

क़रीब-क़रीब !

[ख़ामोशी]

बोलती बन्द।

[ख़ामोशी]

मेरे सिर मे कुछ टप-टप गिर रहा है। जब से वह नासूर नज़र आया है।

[नैग फुसफुसा कर हँसता है।]

टप, टप, लगातार, एक ही जगह पर।

[ख़ामोशी]

शायद कोई नाड़ी फड़क रही हो।

[ख़ामोशी]

या कोई छोटी-सी नस।

[ख़ामोशी। कुछ ताज़गी से]

बस अब और बक़वास नहीं। कहानी ! कहाँ तक

पहुँचा था मैं ?

[खामोशी। किस्सा सुनाने वाले के-से लहजे में]
हाँ तो वह आदमी पेट के बल रेंगता हुआ मेरी तरफ बढ़ रहा था। पीला ज़र्द आदमी, पीला और पतला, जैसे लबे-जान...

[खामोशी। साधारण लहजे में]
नहीं। यह मैं पहले सुना चुका हूँ।

[खामोशी। किस्सा सुनाने वाले के-से लहजे में]
हाँ तो मैंने इत्मीनान से पाइप में तम्बाकू दबाया...अपने बढ़िया पाइप में...और फिर उसे अपने बढ़िया लाइटर से सुलगाकर कुछ कश लगाये। मज़ा आ गया!

[खामोशी]
पूछा, बताओ भाई क्या चाहते हो?

[खामोशी]
उस दिन कड़ाके की सरदी थी, मुझे अब तक याद है, सिफर का दरजा, लेकिन यह देखते हुए कि है क्रिसिमस से पहले की शाम थी, सरदी शायद ज्यादा नहीं थी। बल्कि उस मौसम को सुहाना ही कहा जायेगा।

[खामोशी]
हाँ तो बताओ भाई, तुम मेरे रास्ते में कैसे आ पड़े? उसने सिर उठाकर मेरी तरफ़ देखा और देखता रह गया। उसका चेहरा गर्द और आँसुओं से गन्दा हो रहा था।

[खामोशी। साधारण लहजे में]
अब शायद बात बन रही है।

[किस्सा बनाने वाले के-से लहजे में]
नहीं, नहीं, भाई, इस तरह मेरी तरफ़ मत देखो। उसने निगाहें नीची कर ली। और कुछ बुदबुदाया। ...

मुआफी माँग रहा था।

[खामोशी]

मुझे और भी कई काम है, तुम जानो, क्रिस्मिस है।

[खामोशी। कड़ककर]

अब कुछ बोलोगे भी? आखिर इस हमले का मतलब?

[खामोशी]

बहुत ही खूबसूरत और चमकदार दिन था, मुझे याद है, पच्चास का दरजा, लेकिन सूरज डूब रहा था, लाशों से लदा सूरज।

[साधारण आवाज़ में]

क्या जुमला हुआ है!

[किस्सा सुनाने वाले के-से लहजे में]

अच्छा भाई, अब जल्दी करो, अपनी दरख्वास्त पेश करो, ताकि मैं कोई और काम कर सकूं।

[खामोशी। साधारण लहजे में।]

क्या गज़ब का तर्जे-कलाम पाया है!

[किस्सा सुनाने वाले के-से लहजे में]

और आखिर हिम्मत करके वह बोला...हूज़ूर मैं अपने इस बच्चे के बारे में आपके पास आया हूँ। बच्चे के बारे मे? मैंने कहा। जी, अपने इस बेटे के बारे में, वह बोला। जैसे बेटे-बेटी में बहुत फर्क हो। तुम आये कहाँ से हो? मैंने दरयाफ्त किया। उसने किसी नामुराद गाँव का नाम लिया। जहाँ से घोड़े पर सफ़र करो तो आधा दिन लग जाये। क्या बक रहे हो, मैंने कहा, क्या वह गाँव अभी तक आबाद है? जी नहीं, वह बोला, सब उजड़ चुका है, सिवाय मेरे और मेरे बेटे के। तब ठीक है, मैंने कहा। फिर मैंने खलीज के उस पार वाले एक गाँव के बारे में पूछा।

वहाँ भी एक पापी तक नहीं बचा रह गया, उसने जवाब दिया। ठीक है, मैंने कहा। लेकिन तुम्हारा मतलब है कि तुम अपने उस जीते-जागते अज़ीज को वहाँ अकेला छोड़ आये हो ? मैं नहीं मानता !

[खामोशी]

उस रोज़ ऐसी बला की गरमी थी, कि मुझे याद है, सौ का दरजा। और आंधी इतनी तेज़ कि मुर्दा देवदारु उखड़-उखड़कर उड़ रहे थे।

[खामोशी। साधारण लहजे में]

बात बनी नहीं !

[कहानी सुनाने वाले के-से लहजे में]

अच्छा अब बोलोगे भी, बन्दाए खुदा! आखिर तुम चाहते क्या हो ? मुझे क्रिसमस की तैयारी भी तो करनी है।

[खामोशी]

तो क़िस्सा कोताह, बात यह निकली कि वह अपने उस छोकरे के लिए रोटी माँगने आया था। रोटी ? मैंने कहा। लेकिन रोटी तो मेरे पास नहीं है। मुझे तो रोटी हज़म ही नहीं होती। अच्छा तो मुट्ठी भर अनाज ही दे दो, वह बोला।

[खामोशी। साधारण लहजे में]

यह फ़िकरा खूब चुस्त हुआ।

[किस्सागो के-से लहजे में।]

अनाज, हाँ, अनाज तो मेरे जखीरों में है। लेकिन जरा अक़्ल से काम लो। मान लो मैं तुम्हें सेर-आध-सेर अनाज दे देता हूँ, और तुम लेजाकर अपने बेटे के लिए...अगर वह तुम्हारे पीछे मर न गया हो तो...उससे दलिया बना लेते हो...

[नैग ललचा जाता है।]

...दलिया बनाकर उसे देते हो, वह खाता है, और उसके गालों पर फिर रौनक लौट आती है...मान लो यह सब हो जाता है लेकिन उसके बाद ?

[खामोशी]

मैं ताव में आ गया।

[कड़ककर]

अक्ल से काम लो, अक्ल से, कि तुम इस धरती पर हो, और उसका कोई इलाज नहीं।

[खामोशी]

बहुत ही खुश्क दिन था, मुझे याद है। हाइग्रोमीटर के हिसाब से सिफ़र। मेरी कमर के दर्द के लिए लाजवाब मौसम !

[खामोशी। कड़ककर]

लेकिन तुम समझते क्या हो ? कि धरती पर फिर बहार आ जायेगी ? कि दरिया और समुन्दर फिर मछलियों से भर जायेंगे ? कि आसमान से तुम जैसे बेवकूफ़ों के लिए सोमरस बरसेगा।

[खामोशी]

धीरे-धीरे मैं ठण्डा हुआ था। कम-अज़-कम कुछ सँभलकर मैंने उससे पूछा कि उसे रास्ते में कितनी देर लगी थी। बोला, तीन दिन। मैंने पूछा जब वह रवाना हुआ था तो बेटा क्या कर रहा था। बोला, गहरी नींद सोया हुआ था।

[कड़ककर]

मैंने पूछा, गहरी नींद से क्या मतलब ?

[खामोशी]

क़िस्साकोताह, मैंने उसे नौकर रख लेना मंजूर कर

लिया। मुझे उसपर तरस आ गया था, और साथ ही मैं यह भी जानता था कि मेरा पत्ता अब गोल होने ही वाला है।

[हंसता है। खामोशी]

मंजूर है ? मैंने पूछा।

[खामोशी]

बोलो ! यहां अगर संभलकर चलोगे तो आराम से वक़्त पर मर सकोगे।

[खामोशी]

बोलो !

[खामोशी]

आखिर वह बोला। कहता है कि उसके बेटे को भी रखना होगा, बशर्ते कि वह मर न गया हो तो।

[खामोशी]

मैं इसी बात के इन्तज़ार में था।

[खामोशी]

कि उसके बेटे को भी…

[खामोशी]

मैं अब भी उसे देख सकता हूं—वह घुटनों के बल बैठा है, उसकी दोनों हथेलियां जमीन पर हैं, और अब वह वहशियाना निगाहों से मेरी तरफ़ देख रहा है, जैसे मुझे ललकार रहा हो।

[खामोशी। साधारण लहजे में]

बस अब जल्दी ही खत्म हो जायेगी।

[खामोशी]

बशर्ते कि और किरदार न आ जाएं तो।

[खामोशी]

लेकिन आएंगे कहां से ?

[खामोशी]

मिलेंगे कहाँ ?

[खामोशी। सीटी बजाता है। क्लोव आता है।]

आओ दुआ माँगें।

नैग : मेरी टॉफी !

क्लोव : बावर्चीखाने में एक चूहा है।

हैम : चूहा ! क्या चूहे अभी खत्म नहीं हुए ?

क्लोव : बावर्चीखाने में एक है।

हैम : तो मार क्यों नहीं डाला ?

क्लोव : तुम बीच में ही बुला न लेते तो अब तक पूरा मर गया होता।

हैम : भाग तो नहीं जाएगा ?

क्लोव : नहीं।

हैम : तो ठीक है, बाद में खत्म कर लेना। आओ अब दुआ माँगें।

क्लोव : दुआ ! दोबारा ?

नैग : मेरी टॉफ़ी !

हैम : पहले खुदा !

[खामोशी]

ठीक तो हो ?

क्लोव : (कन्धे सुकेड़कर) जो तुम्हारी मर्ज़ी।

हैम : (नैग से) तुम भी !

नैग : (हाथ जोड़कर, आँखें बन्द कर लेता है और बड़बड़ाता है।) हे परमपिता परमेश्वर, दीनों के नाथ...

हैम : खामोश। दिल में ! गुस्ताखी करते हो !

[खामोशी]

हाँ, तो, एक, दो, तीन !

[प्रार्थना की मुद्रा में। खामोशी। उस मुद्रा से बाहर आकर। नाखुश लहजे में]

क्या खयाल है?

क्लोव : (प्रार्थना की मुद्रा से बाहर आकर) कोई उम्मीद नहीं! तुम्हें?

हैम : मेरी भली पूछते हो!

[नैग से]

और तुम्हें?

नैग : ठहरो!

[खामोशी। प्रार्थना की मुद्रा छोड़कर]

कुछ नहीं होगा।

हैम : हरामी! शायद है ही नहीं!

क्लोव : अभी पैदा नहीं हुआ।

नैग : मेरी टॉफी।

हैम : टॉफियाँ खत्म!

[खामोशी]

ठीक है। आखिर मैं तुम्हारा बाप जो हुआ। बेशक अगर मैं न होता तो कोई और होता। लेकिन इस बहानेबाजी से क्या फ़ायदा?

[खामोशी]

मिसाल के तौर पर वह तुर्की टॉफी! मेरी चहेती चीज। मैं जानता हूँ कि अब नहीं मिलती। लेकिन किसी रोज मैं तुमसे किसी बात के बदले माँगूँगा और तुम हाँ कर दोगे। वक्त के मुताबिक बदलते जाना चाहिए।

[खामोशी]

जब तुम अभी बच्चे थे और रात को तुम्हें डर लगता था तो, जानते हो, किसे पुकारा करते थे? माँ को नहीं,

मुझे! और हम हमेशा पहले तो तुम्हें आराम से रोते रहने देते, फिर उठाकर कहीं दूर डाल आते ताकि हम आराम से सो सकें।

[खामोशी]

और तुमने मुझे बादशाहों की-सी नींद से जगाकर कहानी सुनने पर मजबूर किया! पूछ सकता हूँ क्यों?

[खामोशी]

मैं जानता हूँ कि वह दिन दूर नहीं जब सचमुच तुम चाहोगे कि मैं तुम्हारी बात सुनूं, जब तुम मेरी आवाज के लिए, किसी आवाज के लिए तरसोगे।

[खामोशी]

वह दिन दूर नहीं जब तुम फिर मुझे उसी तरह पुकारोगे जिस तरह बचपन में रात को डरकर पुकारा करते थे…।

[खामोशी। नैग नैल के ड्रम का ढक्कन खटखटाता है। खामोशी]

नेल!

[खामोशी। और जोर से खटखटाता है। खामोशी। और जोर से]

नेल!!

[खामोशी। नैग अपने ड्रम में डूब जाता है और ढक्कन बन्द कर लेता है। खामोशी]

हैम : हमारा जश्न खत्म!

[कुत्ते के लिए इधर-उधर हाथ मारकर]

कुत्ता भी गया!

क्लोव : नकली कुत्ता नहीं जा सकता।

हैम : (हाथ इधर-उधर मारता है।) तो कहाँ है?

क्लोव : लेटा हुआ है।

हैम : उठाकर दो इधर।

[क्लोव कुत्ता उठाकर उसे देता है। हैम उसे गोद में ले लेता है। खामोशी। हैम कुत्ते को परे पटख देता है।]

गन्दा जानवर !

[क्लोव कुत्ते के टुकड़े उठाने लगता है।]

क्या कर रहे हो ?

क्लोव : सफ़ाई !

[सीधा होकर। जोश से]

सब साफ़ कर डालूंगा।

[फिर टुकड़े उठाने लगता है।]

हैम : सफाई !

क्लोव : (सीधा होकर) हाँ सफ़ाई ! मैंने हमेशा ऐसी दुनिया का ख्वाब लिया है जहाँ चारों तरफ खामोशी और शान्ति हो, और हर चीज करीने से अपनी-अपनी आखिरी जगह पर, अपनी-अपनी आखिरी कब्र में सजी हुई हो।

[टुकड़े उठाने में लग जाता है।]

हैम : (विक्क होकर) बताओगे भी कि तुम कर क्या रहे हो !

क्लोव : (सीधा होकर) सफाई करने की कोशिश।

हैम : चुपचाप फेंक दो जो हाथ में है।

[क्लोव फेंक देता है।]

क्लोव : ठीक है, यहाँ नहीं तो कहीं और।

[दरवाजे की तरफ़ जाता है।]

हैम : (चिड़चिड़ाकर) तुम्हारे पैरों में क्या हुआ ?

क्लोव : पैरों में !

हैम : यह आवाज़ !

क्लोव : बूटों की होगी।

हैम : चप्पलें घूम रही थी ?

[खामोशी]

क्लोव : मैं तुम्हें छोड़कर चला जाऊँगा।

हैम : ऐसा मत करना !

क्लोव : आखिर किसलिए यहाँ रहूँ ?

हैम : बातचीत के लिए।

[खामोशी]

मेरी कहानी आगे बढ रही है।

[खामोशी]

खूब आगे बढ रही है।

[खामोशी। चिड़चिड़े लहजे में]

पूछो कहाँ तक बढ चुकी ?

क्लोव : जरा यह तो बताओ कि तुम्हारी कहानी क्या हुई ?

हैम : (हैरानी से) कौन-सी कहानी ?

क्लोव : वही जो बरसों से घढ रहे हो।

हैम : यानि मेरा इतिहास !

क्लोव : हाँ वही।

[खामोशी]

हैम : (नाराज होकर) अब बात आगे भी बढ़ाओगे ?

क्लोव : तो क्या वह इतिहास अभी तक चल रहा है ?

हैम : हाँ भई, चल ही रहा है, लेकिन तुम जानो काम आसान नही।

[आह खींचकर]

बीच मे कई-कई दिन ऐसे भी आते हैं कि एक इंच आगे नहीं बढ़ पाता।

[खामोशी]

तुम जानो भई, यह तो मूड का सवाल है।

[खामोशी]

आये आये, न आये न आये।

[खामोशी]

फिर भी जुटा हुआ हूँ।

[खामोशी]

जान लड़ा रहा हूँ।

[खामोशी]

नई टेक्नीक है, क्या बतायें अपने बस की बात तो है नहीं।

[खामोशी]

कुल मिलाकर यही कहूँगा भाई, कि काम ठीक ही चल रहा है।

बलोच : (प्रशंसात्मक लहजे में) कमाल है साहिब ! यह कोई मामूली बात नहीं साहिब ! हम तो हैरान हैं कि किस तरह आप उसे इतनी दूर तक खींच ले गये।

हैम : (हलीम लहजे में) नहीं, भाई, ज्यादा दूर तक नहीं। फिर भी कुछ न होने से बेहतर ही है।

बलोच : क्यों नहीं साहिब, क्यों नहीं।

हैम : लो, सुनोगे कि है क्या ? वह पेट के बल रेंगता हुआ...

बलोच : वह कौन ?

हैम : क्या कहा ?

बलोच : किस की बात कर रहे हो ? वह कौन ?

हैम : वह ! अरे वही और कौन !

बलोच : अच्छा वह ! अब समझा।

हैम : हाँ, तो रेंगता हुआ आता है, अपने बेटे के लिए रोटी माँगने। उसे माली की नौकरी पेश की जाती है। पेश्तर इसके कि...

[बलोव खिलखिला उठता है।]

इसमें हँसने की क्या बात ?

बलोव : माली की नौकरी !

हैम : हाँ, लेकिन तुम्हें हँसी इसी पर आई।

बलोव : इसी पर ही आई होगी।

हैम : रोटी पर नहीं ?

बलोव : न ही बेटे पर।

[खामोशी]

हैम : वैसे तो सारा किस्सा ही मजाकिया है। क्यों न हम दोनों मिलकर हँसें ?

बलोव : (सोचकर) एक दिन मे दो बार ? मेरे से नही होगा।

हैम : (सोचकर) मेरे से भी नही।

[खामोशी]

तो आगे सुनो। हाँ करने से पहले वह पूछता है कि उसका बेटा भी उसके साथ रह सकेगा या नही।

बलोव : बेटे की उमर ?

हैम : अरे बिलकुल बच्चा।

बलोव : होता तो दरख्तों पे चढता।

हैम : कई ओर छोटे-मोटे काम भी करता।

बलोव : फिर बडा हो जाता।

हैम : हो सकता है।

[खामोशी]

बलोव : अब आगे भी बढोगे।

हैम : आगे अभी कुछ नहीं। मैं बस यहीं पर रुका हुआ हूँ।

[खामोशी]

बलोव : लेकिन कुछ नक्शा तो होगा दिमाग़ में ?

हैम : है तो धुंधला-सा।

क्लोव : तो क्या जल्दी ही खत्म नहीं हो रही ?

हैम : सवाल तो यही है।

क्लोव : हां, लेकिन यह खत्म होगी तो तुम कोई और ले बैठोगे।

हैम : जरूरी नहीं।

[खामोशी]

सोते सूख गए महसूस होते हैं।

[खामोशी]

इतना लम्बा तखलीक़ी काम !

[खामोशी]

अगर किसी तरह से घिसटता पड़ता समुन्दर के किनारे तक पहुँच सकूं ! रेत का सिरहाना हो, और लहरें !

क्लोव : लहरें खत्म !

[खामोशी]

हैम : जरा देखो तो, शायद मर गई हो।

[क्लोव नेल के ड्रम का ढक्कन उठाता है, और अन्दर झांकता है। खामोशी]

क्लोव : दिखाई तो यही देता है।

[ढक्कन बन्द कर देता है। सीधा हो जाता है। हैम अपनी टोपी उतारकर ऊपर उठाता है। खामोशी। टोपी पहन लेता है।]

हैम : (हाथ टोपी पर) अब नैग को देखकर बताओ।

[क्लोव नैग का ढक्कन उठाकर झुककर झांकता है। खामोशी।]

क्लोव : अभी नहीं।

[ढक्कन बन्द करके सीधा हो जाता है।]

हैम : (टोपी से हाथ हटाकर) क्या कर रहा है ?

[क्लोव नेग का ढक्कन उठाकर फिर झांकता है। खामोशी।]

क्लोव : रो रहा है।

[ढक्कन बन्द करके सीधा हो जाता है।]

हैम : यानि जिन्दा है।

[खामोशी]

कभी एक पल भी तुम्हे खुशी का मिला है?

क्लोव : जहाँ तक मुझे याद है, नहीं।

[खामोशी]

हैम : खिडकी के पास ले चलो। (क्लोव कुरसी को तरफ़ जाता है)

ताकि मैं अपने चेहरे पर रोशनी महसूस कर सकूँ।

[क्लोव कुरसी धकेलता है।]

याद है शुरू-शुरू में जब तुम कुरसी धकेला करते थे तो इसे बहुत ऊपर उठा दिया करते थे। कदम-कदम पर मुझे लगता था कि अब गिरा कि अब गिरा।

[बूढ़ों के-से कांपते लहजे में]

क्या मजे के दिन थे वे भी!

[उदास होकर]

और फिर वे दिन बीत गये।

[क्लोव दाईं खिड़की के पास पहुंचकर रुक जाता है।]

पहुँच भी गये?

[खामोशी। सिर पीछे हटाकर ऊपर देखता है।]

रोशनी है?

क्लोव : अँधेरा अभी नहीं हुआ।

हैम : (कड़ककर) मैंने पूछा था रोशनी है कि नहीं?

क्लोव : है।

[खामोशी]

हैम : पर्दा खुला है ?

क्लोव : हाँ खुला है।

हैम : कौन-सी खिड़की है ?

क्लोव : ज़मीन वाली।

हैम : मैं जानता था।

[गुस्से में]

इसमें रोशनी कहाँ से आई ? दूसरी के पास ले चलो।

[क्लोव कुरसी धकेलकर बाईं खिड़की की तरफ ले जाता है। हैम सिर पीछे हटाकर ऊपर देखता है।]

हैम : यह हुई न रोशनी !

[खामोशी]

महसूस होता है सूरज की किरन हो।

[खामोशी]

है कि नहीं ?

क्लोव : नही।

हैम : तो यह सूरज की किरन नही ?

क्लोव : नही।

[खामोशी]

हैम : मेरा रंग क्या बहुत सफेद है ?

[खामोशी। गुस्से में]

पूछ रहा हूँ मेरा रंग क्या बहुत सफेद है ?

क्लोव : जैसा हर रोज़ होता है।

[खामोशी]

हैम : खिड़की खोल दो।

क्लोव : किसलिए ?
हैम : मैं समुन्दर की आवाज सुनना चाहता हूँ।
क्लोव : सुनाई नही देगी।
हैम : खिड़की खोल देने पर भी नहीं ?
क्लोव : हाँ नहीं।
हैम : यानि खोलने से कोई फायदा नही।
क्लोव : हाँ नही।
हैम : (कड़ककर) तो खोल दो !
[क्लोव सीढ़ी पर चढ़कर खिड़की खोल देता है।]
खोल दी ?
क्लोव : हाँ।
[खामोशी]
हैम : सच कह रहे हो ?
क्लोव : हाँ !
[खामोशी]
हैम : तो...!
[खामोशी]
बहुत शान्त होगा।
(खामोशी। कड़ककर)
पूछ रहा हूँ शान्त है कि नही ?
क्लोव : है।
हैम : इसलिए कि जहाज रहे हैं न जहाजी।
(खामोशी)
अचानक गुम-सुम क्यों हो गये ? ठीक तो हो ?
क्लोव : ठण्ड लग रही है।
हैम : कौन-सा महीना है ?
[खामोशी]

अच्छा तो बन्द कर दो। और वापस ले चलो।

[क्लोव खिड़की बन्द कर देता है, नीचे उतरता है, कुरसी को धकेलकर अपनी जगह पर ले आता है, सिर नीचा किए कुरसी के पीछे खड़ा रहता है।]

वहाँ पीछे क्यों खड़े हो? You give me the shivers...

[क्लोव हटकर कुरसी के पहलू में आ खड़ा होता है।]

पिताजी!

[खामोशी। ऊँची आवाज़ में]

पिताजी!

[खामोशी]

जाकर देखो सुनाई दिया कि नहीं।

[क्लोव नैग के ड्रम के पास जाकर ढक्कन उठाता है, झुककर झांकता है। बड़बड़ाहट की आवाज़। क्लोव सीधा हो जाता है।]

क्लोव : दिया था।

हैम : दोनों बार?

[क्लोव झुकता है। पहले की तरह]

क्लोव : एक ही बार।

हैम : पहली बार या दूसरी बार?

[क्लोव झुकता है। पहले की तरह]

क्लोव : कहता है, कह नहीं सकता।

हैम : दूसरी बार ही होगा।

क्लोव : शायद।

[ढक्कन बन्द कर देता है।]

हैम : अभी तक रो रहा है?

क्लोव : नहीं।

हैम : मुर्दे तेज होते है ।

[खामोशी]

कर क्या रहा है ?

क्लोव : बिस्कुट चूस रहा है।

हैम : यानि कि जिन्दगी चल रही है।

[क्लोव कुरसी के पास अपनी जगह पर वापस लौट आता है।]

एक कम्बल और ले आओ, बहुत सर्दी है।

क्लोव : कम्बल खत्म ।

[खामोशी]

हैम : मुझे चूमो ।

[खामोशी]

क्लोव : नही।

हैम : माथे पर भी नही ?

क्लोव : कही भी नही।

[खामोशी]

हैम : (हाथ बढ़ाकर) लाओ हाथ में हाथ ही दो।

[खामोशी]

हाथ भी नही दोगे ?

क्लोव : मैं तुम्हे छूना तक नही चाहता ।

[खामोशी]

हैम : तो कुत्ता ही ला दो ।

[क्लोव कुत्ते के लिए इधर-उधर देखता है।]

रहने दो।

क्लोव : कुत्ता नहीं चाहिए ?

हैम : नही।

क्लोव : तो मैं जाऊँ ?

हैम : (सिर नीचा किए, धीमे से) जाओ।

[क्लोव दरवाज़े के पास जाकर मुड़ता है।]

क्लोव : अगर मैंने जाकर उस चूहे को न मारा तो वह मर जाएगा।

हैम : (पहले के-से लहजे में) ठीक कहते हो।

[क्लोव बाहर जाता है। खामोशी]

मेरी चाल !

[रूमाल जेब से निकालता है, खोलकर अपने सामने फैला लेता है।]

गाड़ी घिसट ही रही है।

[खामोशी]

इन्सान बार-बार रोता है, बिला वजह, ताकि उसे हँसना न पड़े, और फिर, आहिस्ता-आहिस्ता, उसे...उसे नुकसान उठाना पडता है।

[रूमाल तह कर लेता है, फिर उसे जेब में डाल लेता है। सिर उठाता है।]

वे सब जिन्हें मैं चाहता तो बचा सकता था।

[खामोशी]

बचा सकता था।

[खामोशी]

यानि निजात दिला सकता था।

[खामोशी]

निजात दिला सकता था।

[खामोशी]

उन तमाम करोडों रेंगते हुए कीड़ों को।

[खामोशी। फड़ककर]

अक्ल से काम लो, अक्ल से, तुम इस धरती पर हो, और इसका कोई इलाज नहीं।

[खामोशी]

जाओ, जाकर एक-दूसरे से प्यार करो। अपने पड़ोसी को उसी तरह चूमो-चाटो जिस तरह अपने-आपको चूमते-चाटते हो।

[खामोशी। शान्त होकर]

कभी रोटी मांगते थे तो कभी crumpets।

[खामोशी। शान्त होकर]

जाओ, जाकर एक-दूसरे को चूमो-चाटो।

[खामोशी]

और यह सब!

[खामोशी]

कुत्ता तक असली नहीं!

[शान्त होकर]

शुरू और अन्त एक है। लेकिन इन्सान माने तो।

[खामोशी]

अब उस कहानी को कुछ और घसीटकर खत्म कर देना चाहिए ताकि कोई और शुरू की जा सके।

[खामोशी]

शायद मुझे अपने-आपको घसीटकर फर्श पर गिरा डालना चाहिए।

[बहुत मुश्किल से अपने-आपको कुरसी से बाहर घसीटने की कोशिश के बाद फिर उसी में जा गिरता है।]

दरारों में नाखून फँसाकर उंगलियों के सहारे आगे घिसटता हुआ मैं जब…

[खामोशी]

मैं खत्म हो रहा हूंगा, और सोचूंगा कि यह कैसे हुआ, मैं

यहां तक कैसे पहुँचा···

[झिझककर]

···इतनी देर से क्यों पहुँचा !

[खामोशी]

इस खाली ठंडी पनाह में पडा मैं, और बाहर खामोशी···

[झिझकता है]

···और जमूद । अगर मैं दम साधकर चुपचाप बैठ सकूं तो सब शोर और हरकत खत्म हो जाएगी ।

[खामोशी]

मैंने अपने बाप को पुकार लेने के बाद और अपने···

[झिझकता है]

···अपने बेटे को भी । अगर पहली बार आवाज़ उनके कानों तक नही पहुँची होगी तो दूसरी या तीसरी बार भी पुकारे जा सकेंगे ।

[खामोशी]

और मैं सोचूँगा, वह ज़रूर लौट आएगा ।

[खामोशी]

और फिर ?

[खामोशी]

और फिर ?

[खामोशी]

वह नही लौटेगा, बहुत दूर निकल गया है ।

[खामोशी]

और फिर ?

[खामोशी । फिर बेकरार होकर]

हर तरह के वहम ! कि कोई मुझे भाँप रहा है ! चूहा ! सीढ़ियाँ ! साँस रोको ! साँस छोड़ो !

[सांस छोड़कर]

टर-टर-चर-चर जैसे कोई अकेला उदास बच्चा अपने-आपको दो-तीन बच्चों में बदल ले ताकि उसे अंधेरे में डर न महसूस हो।

[खामोशी]

लम्हे के ऊपर लम्हा, जैसे जवार के दाने ऊपर जवार का दाना···

[झिझकता है।]

जैसा कि उस यूनानी हकीम ने कहीं कहा है, और जिन्दगी भर तुम इसी इन्तजार में रहते हो कि इसी तरह तुम्हारे बन जाएगा।

[खामोशी। बोलने के लिए मुंह खोल देता है। फिर खयाल छोड़ देता है।]

अब किस्सा खत्म होना चाहिए।

[सीटी बजाता है। क्लोव अलार्म घड़ी लिये दाखिल होता है। कुरसी के पहलू में आकर खड़ा हो जाता है।]

यह क्या? तुम न मरे, न गए?

क्लोव : रूहानी तौर पर···

हैम : मर चुके हो या जा चुके हो?

क्लोव : दोनों काम हो चुके हैं।

हैम : मुझसे अलग होना और मरना एक बराबर?

क्लोव : मरना और तुमसे अलग [illegible]।

हैम : बाहर चारों तरफ मौत

[खामोशी]

और यह घड़ा?

क्लोव : भाग ।

हैम : भागकर कहाँ जाएगा ?

[खामोशी। चिन्तित होकर]

बोलो !

क्लोव : दूर जाना ही नहीं पड़ेगा उसे।

हैम : दर्द की दवा का वक़्त ..

क्लोव : हो गया।

हैम : आखिर हुआ तो ! लाओ इधर ! जल्दी करो !

[खामोशी]

क्लोव : दर्द की दवा ख़त्म !

हैम : (शरदर होकर) खूब...!

[खामोशी]

दर्द की दवा ख़त्म !

क्लोव : दर्द की दवा ख़त्म। अब और दवा नहीं मिलेगी।

[खामोशी]

हैम : लेकिन वह गोल डिबिया। भरी पड़ी थी !

क्लोव : थी। अब ख़ाली है।

[खामोशी। क्लोव कमरे में टहलने लगता है। अलार्म घड़ी के लिए कोई जगह तलाश कर रहा है।]

हैम : (नर्म लहजे में) अब क्या होगा ?

(खामोशी। चीखकर) अब क्या होगा ?

[क्लोव की निगाह तस्वीर पर जा पड़ती है। उसे उतारकर उल्टे मुँह दीवार से टिका देता है, और उसकी जगह पर घड़ी टाँग देता है।]

यह क्या कर रहे हो ?

क्लोव : चलने की तैयारी।

हैम : धरती को देखो।

क्लोव : फिर।

हैम : क्योंकि वह तुम्हें पुकार रही है।

क्लोव : गला क्यों बैठ गया ?

[खामोशी]

गोली दूँ ?

[खामोशी]

नहीं।

[खामोशी]

न सही।

[क्लोव गुनगुनाता हुआ दाईं खिड़की की तरफ़ जाता है, रुक-रुककर ऊपर निगाह डालता है।]

हैम : गाना बन्द करो।

क्लोव : (हैम की तरफ मुँह फेरकर) गाने तक की इजाजत भी नही अब ?

हैम : नही।

क्लोव : तो खत्म कैसे होगा ?

हैम : तो तुम खत्म करना चाहते हो ?

क्लोव : मैं गाना चाहता हूँ।

हैम : मैं तुम्हे रोक नही सकता।

[खामोशी। क्लोव दाईं खिड़की की तरफ मुड़ता है।]

क्लोव : वह सीढ़ी क्या हुई ?

[इधर-उधर देखता है।]

तुमने तो नही देखी कहीं ?

[देख लेता है।]

मिल गई।

[बाईं खिड़की की तरफ़ जाता है।]

कभी-कभी लगता है, शायद दिमाग़ ठिकाने पर नहीं रहा।
फिर लगता है सब साफ़ है।

[सीढ़ी पर चढ़कर बाहर झाँकता है।]

कमाल है, पानी में डूबती जा रही है।

[झाँकता है।]

लेकिन यह कैसे हो सकता है?

[आँखों पर हाथ का साया करके फिर झाँकता है।]

बारिश भी नहीं हुई।

[शीशा पोंछता है। देखता है। खामोशी]

मैं भी गधा हूँ। बिल्कुल गधा। गलत खिड़की में झाँक रहा हूँ।

[नीचे उतरकर दो कदम दाईं खिड़की की तरफ़ बढ़ता है।]

पानी ही पानी!

[सीढ़ी के लिए वापस मुड़ता है।]

मैं गधा हूँ।

[सीढ़ी उठाकर दाईं खिड़की की तरफ़ ले जाता है।]

कभी-कभी लगता है शायद होश गुम हो रहे हैं। फिर लगता है सब साफ़ है।

[सीढ़ी लगाकर ऊपर चढ़ता है, झाँकता है, मुड़कर हैम की तरफ़ देखता है।

कोई खास हिस्सा देखूँ या सारी धरती?

हैम : सारी धरती।

क्लोव : यानि जनरल नज़ारा? एक मिनिट।

[खिड़की से बाहर झाँकता है। खामोशी।

हैम : क्लोव।

तुम्हारे नीचे तो नहीं ?

[कुरसी सरकाता है, उसके नीचे देखता है और तलाश शुरू कर देता है।]

हैम : (व्यथित लहजे में) कुरसी को यहीं छोड़ दोगे ?

[क्लोव गुस्से में कुरसी को धकेलकर उसकी निश्चित जगह पर ले जाता है।]

क्या मैं ऐन सेण्टर में हूँ ?

क्लोव : मेरे पास अब खुर्दबीन तो है नहीं कि···

[दूरबीन दिखाई दे जाती है।]

मिल गई !

[दूरबीन उठा लेता है, सीढ़ी पर चढ़कर दूरबीन लगाकर बाहर देखता है।]

हैम : मेरा कुत्ता कहाँ है ?

क्लोव : (दूरबीन में देखते हुए) खामोश !

हैम : (कड़ककर) मेरा कुत्ता कहाँ है ?

[क्लोव दूरबीन फेंक सिर पीट लेता है। खामोशी। तेज़-तेज़ नीचे उतरता है। कुत्ते के लिए इधर-उधर देखता है। नज़र आ जाने पर उसे उठा लेता है। लपककर हैम के पास पहुँचता है और कुत्ता उसके सिर पर दे मारता है।]

क्लोव : यह लो अपना कुत्ता !

[कुत्ता नीचे गिर जाता है। खामोशी]

हैम : अब मारने भी लगे !

क्लोव : पागल कर दिया है तुमने मुझे !

हैम : अगर मारना ही है तो कुल्हाड़े से मा

[खामोशी]

या फिर गैफ से। हाँ, गैफ से।

मतलब ? कुल्हाड़े से मारो या gaff से।

[क्लोव कुत्ता उठाकर हैम को देता है। हैम कुत्ते को गोद में ले लेता है।]

क्लोव : (याचना करते हुए) अब खेल खत्म होना चाहिए।

हैम : हरगिज़ नहीं।

[खामोशी]

मुझे क़फ़न में डालना होगा।

क्लोव : कफ़न भी खत्म।

हैम : तो फिर करो खत्म खेल।

[क्लोव सीढ़ी की तरफ़ जाता है।]

धमाके से !

[क्लोव सीढ़ी पर चढ़ता है। नीचे उतरता है। दूरबीन खोजता है। देखकर उसे उठा लेता है। सीढ़ी पर चढ़ता है। दूरबीन लगा लेता है।]

अंधेरे के धमाके से ! और मेरा क्या होगा ! मुझ पर किसने कभी रहम किया !

क्लोव : (दूरबीन हटाकर हैम की तरफ मुड़ते हुए) क्या कहा ?

[खामोशी]

मेरा जिक्र कर रहे हो ?

हैम : (गुस्से में) बन्दर, इसे अंग्रेजी में aside (एसाइड) कहते हैं। कभी सुना है नाम कि नहीं ?

[खामोशी]

मैं अब अपनी आखिरी तक़रीर (soliloquy) के लिए तैयार हो रहा हूँ।

क्लोव : मैं बता रहा हूँ कि मैं इस ग़लाज़त के ढेर जिसे धरती कहते हैं की तरफ़ देख रहा हूँ, लेकिन यह तुम्हारा आखिरी हुक्म होगा।

तुम्हारे नीचे तो नही ?

[कुरसी सरकाता है, उसके नीचे देखता है और तलाश शुरू कर देता है।]

हैम : (व्यथित लहजे में) कुरसी को यही छोड़ दोगे ?

[क्लोव गुस्से में कुरसी को धकेलकर उसकी निश्चित जगह पर ले जाता है।]

क्या मैं ऐन सेण्टर मे हूँ ?

क्लोव : मेरे पास अब खुर्दबीन तो है नही कि···

[दूरबीन दिखाई दे जाती है।]

मिल गई !

[दूरबीन उठा लेता है, सीढ़ी पर चढ़कर दूरबीन लगाकर बाहर देखता है।]

हैम : मेरा कुत्ता कहाँ है ?

क्लोव : (दूरबीन में देखते हुए) खामोश !

हैम : (कड़ककर) मेरा कुत्ता कहाँ है ?

[क्लोव दूरबीन फेंक सिर पीट लेता है। खामोशी। तेज-तेज नीचे उतरता है। कुत्ते के लिए इधर-उधर देखता है। नजर आ जाने पर उसे उठा लेता है। लपककर हैम के पास पहुँचता है और कुत्ता उसके सिर पर दे मारता है।]

क्लोव : यह लो अपना कुत्ता !

[कुत्ता नीचे गिर जाता है। खामोशी]

हैम : अब मारने भी लगे !

क्लोव : पागल कर दिया है तुमने मुझे !

हैम : अगर मारना ही है तो कुल्हाड़े से मारो।

[खामोशी]

या फिर गैफ से। हाँ, गैफ से। कुत्ते से मारने का क्या

मतलब ? कुल्हाड़े से मारो या gaff से।

[क्लोव कुत्ता उठाकर हैम को देता है। हैम कुत्ते को गोद में ले लेता है।]

क्लोव : (याचना करते हुए) अब खेल खत्म होना चाहिए।

हैम : हरगिज नहीं।

[खामोशी]

मुझे कफ़न में डालना होगा।

क्लोव : कफ़न भी खत्म।

हैम : तो फिर करो खत्म खेल।

[क्लोव सीढ़ी की तरफ़ जाता है।]

धमाके से !

[क्लोव सीढ़ी पर चढ़ता है। नीचे उतरता है। दूरबीन खोजता है। देखकर उसे उठा लेता है। सीढ़ी पर चढ़ता है। दूरबीन लगा लेता है।]

अंधेरे के धमाके से ! और मेरा क्या होगा ! मुझ पर किसने कभी रहम किया !

क्लोव : (दूरबीन हटाकर हैम की तरफ मुड़ते हुए) क्या कहा ?

[खामोशी]

मेरा जिक्र कर रहे हो ?

हैम : (गुस्से में) बन्दर, इसे अंग्रेजी में aside (एसाइड) कहते हैं। कभी सुना है नाम कि नहीं ?

[खामोशी]

मैं अब अपनी आखिरी तक़रीर (soliloquy) के लिए तैयार हो रहा हूँ।

क्लोव : मैं बता रहा हूँ कि मैं इस ग़लाज़त के ढेर जिसे धरती कहते हैं की तरफ देख रहा हूँ, लेकिन यह तुम्हारा आखिरी हुक्म होगा।

(दूरबीन लगाकर देखता है।) जरा देखें तो !

[दूरबीन घुमाता है।]

कुछ···है···नहीं···कुछ···भी···नहीं·· और जो है··· ठीक···नहीं।

[चौंककर दूरबीन हटा लेता है, उसका मुग्राइना करता है, फिर लगाकर बाहर देखता है। खामोशी।]

मारे गए !

हैम : नई अड़चनें ?

[क्लोव नीचे उतर ग्राता है।]

क्या कोई नया शोशा छिड़ेगा ?

[क्लोव सीढ़ी खिड़की के ग्रौर करीब खींच लेता है, चढ़कर दूरबीन लगाकर बाहर देखता है।]

क्लोव : (मायूस लहजे में) लगता है जैसे कोई छोकरा हो !

हैम : (व्यंग्यात्मक लहजे में) छोकरा !!

क्लोव : जाकर देखता हूँ।

[नीचे उतरकर दूरबीन फेंक देता है, तेज-तेज दरवाजे की तरफ़ जाता है। मुड़ता है।]

गॅफ़ लेता जाऊँ।

[गॅफ़ के लिए इधर-उधर देखता है, देखकर उठा लेता है, ग्रौर तेजी से दरवाजे की तरफ़ बढ़ता है।]

हैम : रुको। (क्लोव रुक जाता है।)

क्लोव : न जाऊँ ? देख लो लड़का है, बड़ा होकर दुनिया फिर से शुरू कर सकता है।

हैम : अगर है तो दो ही सूरतें हैं···या तो वहीं मर जाएगा, या इधर आ जाएगा। और अगर नहीं है तो···

[खामोशी]

क्लोव : तुम समझते हो मैं झूठ बोल रहा हूँ, घड़ रहा हूँ ?

हैम : क्लोव, हमें यहीं पर खत्म करना है। अब मुझे तुम्हारी ज़रूरत नहीं।

[ख़ामोशी]

क्लोव : खुशक़िस्मत हो !

[दरवाज़े की तरफ़ जाता है।]

हैम : गैफ़ यहीं छोड़ जाओ।

[क्लोव गैफ़ उसे देता है, दरवाज़े की तरफ़ बढ़ता है, रुक जाता है, अलार्म घड़ी की तरफ़ देखता है, उसे उतारकर इधर-उधर उसके लिए कोई बेहतर जगह ढूंढ़ता है, ड्रमों की तरफ़ जाता है, और उसे नैग के ढक्कन पर रख देता है। ख़ामोशी]

क्लोव : मैं अब जा रहा हूँ।

[दरवाज़े की तरफ़ बढ़ता है।]

हैम : जाने से पहले···

[क्लोव दरवाज़े पर रुक जाता है।]

···कुछ तो कहो।

क्लोव : कहने को है क्या ?

हैम : दो शब्द···जिन्हें मैं अपने दिल में बिठा सकूँ।

क्लोव : दिल में !

हैम : हाँ।

[ख़ामोशी। ज़ोर से]

हाँ, दिल में !

[ख़ामोशी]

जहाँ और भी क्या कुछ है...साये, सरगोशियाँ, और न जाने क्या...भरा पड़ा है।

[ख़ामोशी]

याद किया करूँगा कि ⋯क्लोव ने कभी मुझसे कोई बात नहीं की। लेकिन, आखिर, जाने से पहले, मेरे कहे बगैर, अपने-आप बोल उठा। बोला। ⋯

क्लोव : (आह भरकर) उफ़!!

हैम : अपने दिल की बात कहो।

क्लोव : दिल!

हैम : दो शब्द जो तुम्हारे दिल से फूटें।

क्लोव : (टकटकी बाँधकर, हॉल की तरफ़ मुँह किए, कोरे लहजे में) मुझे बताया गया, यह प्यार है, हाँ, प्यार। अब समझे⋯

हैम : खुलकर समझाओ।

क्लोव : (पहले की ही तरह)⋯कितना आसान है। मुझे बताया गया, यह दोस्ती है, हाँ, दोस्ती, जो तुम्हें मिली। मुझे बताया गया, यह लो तुम पहुँच गए, सिर उठाकर आसपास की खूबसूरती को देखो। और सफ़ाई को। मुझे बताया गया, तुम जानवर नहीं, इन्सान हो, इन सब बातों पर सोच-विचार करोगे तो सब समझ आ जायेगा। मुझे बताया गया, देख ही रहे हो कि घायलों का इलाज किस महारत से हो रहा है।

हैम : बस!

क्लोव : (पहले की तरह) मैं अपने आप को समझाता हूँ—क्लोव, तुम्हें दुःख झेलने का सही अन्दाज सीखना पड़ेगा, अगर तुम चाहते हो कि वे तुम्हें अज़ाब देना बन्द कर दें। मैं अपने-आप को समझाता हूँ—क्लोव, तुम्हें जी-जान से उनकी खिदमत करनी चाहिए ताकि वे एक दिन तुम्हें रिहाई दे दें। लेकिन अब इतनी देर बाद इस बुढ़ापे में मेरी आदतें नहीं बदल सकतीं। तो मैं यह मानकर चुप

हो जाता हूँ कि अब यह कभी खत्म नही होगा, और मेरी जान कभी भी नही छूटेगी।

[खामोशी]

और फिर एक दिन, अचानक, सब खत्म हो जाता है, बदल जाता है, मैं समझ नही पाता कि क्या सब खत्म हो गया, या सिर्फ मैं ही। मैं बचे-खुचे लफ़्ज़ों का इस्तेमाल करता हूँ—सोना, जागना, शाम! वे जवाब नही देते।

[खामोशी]

मैं अपनी कोठड़ी का दरवाजा खोलकर बाहर निकल जाता हूँ। मेरी कमर इस कदर झुक चुकी है कि मैं सिर्फ अपने पैरों को ही देख सकता हूँ, और अपनी टांगों के दरमियान काली मिट्टी का एक फ़ीता-सा। मैं सोचता हूँ कि धरती शायद बुझ चुकी है, हालांकि मैंने कभी इसे रौशन होते नहीं देखा।

[खामोशी]

सो मैं सोचता हूँ मेरी रिहाई काफी आसान रही।

[खामोशी]

जब मैं गिरूँगा तो मेरी आँखों में खुशी के आँसू होंगे।

[खामोशी। दरवाज़े की तरफ जाता है।]

हैम : क्लोव!

[क्लोव रुक जाता है, लेकिन रुख नहीं फेरता।]

कुछ नहीं।

[क्लोव चलने लगता है]

क्लोव!

[क्लोव रुक जाता है, लेकिन मुँह नहीं फेरता।]

क्लोव : इसे कहते हैं exit या प्रस्थान!

हैम : क्लोव, मैं मश्कूर हूँ।

क्लोव : (मुड़कर, करारी आवाज में) अजी नहीं, मैं आपका मश्कूर हूँ।

हैम : हम दोनों एक-दूसरे के मश्कूर हैं।

[खामोशी। क्लोव दरवाज़े की तरफ़ जाता है।]

एक बात और।

[क्लोव रुक जाता है।]

एक आखिरी काम।

[क्लोव चला जाता है।]

बस मुझ पर चादर डाल दो।

[लम्बी खामोशी]

नहीं ? न सही।

[खामोशी]

अब मेरी चाल !

[खामोशी। थके हुए लहजे में]

आखिरी खेल जो कभी नहीं जीता जा सकता, सो चलो चाल और हार जाओ ताकि सब खत्म हो सके।

[खामोशी। जरा जानदार तरीके से]

और अब ?

[खामोशी]

हाँ !

[कुरसी को गेफ से धकेलता है, पहले की तरह ! क्लोव दाखिल होता है, जैसे सफर के लिए तैयार होकर आया हो—पाजामा, टोप, ट्वीड का कोट, बाज़ू पर बरसाती, छाता, थैला, दरवाज़े के पास खड़ा अचल। आखिर तक हैम की तरफ देखता रहता है।]

खूब।

[खामोशी

हटाओ सब।

[गंफ़ को परे फेंक देता है। कुत्ते को भी फेंक ही रहा होता है लेकिन फिर कुछ सोचकर नहीं फेंकता।]

रहने दो।

[खामोशी]

टोपी उठाओ।

[टोपी उतारकर उठाता है।]

हमारी गाडों को शान्ति मिले !

[खामोशी]

अब फिर पहन लो।

[टोपी पहन लेता है।]

Deuce।

[खामोशी। चश्मा उतार लेता है।]

इसे साफ़ करो।

[रूमाल निकालकर, उसे खोले बग़ैर, उससे चश्मा साफ करता है।]

अब पहनो।

[चश्मा पहन लेता है। रूमाल जेब में रख लेता है।]

आ रहे हैं। अगर इसी तरह चन्द सिस्कियाँ और हुईं तो बुलाना पड़ेगा।

[खामोशी]

अब शाइरी।

[खामोशी]

तुमने दुआ माँगी···

[खामोशी। ठीक करता हूं।]

छोड़ देता है। खामोशी।]

हाँ, सच !

[सीटी बजाता है। खामोशी। और जोर से बजाता है। खामोशी।]

खूब !

[खामोशी]

पिताजी !

[खामोशी, और ऊँची हुई आवाज में]

पिताजी !

[खामोशी]

खूब !

[खामोशी]

हम आ रहे हैं।

[खामोशी]

और आखिरी दाँव ?

[खामोशी]

इसे हटाओ।

[कुत्ते को परे फेंक देता है। सीटी को भी।]

मेरी शुभ कामनाओं सहित।

[सीटी हॉल की तरफ फेंक देता है। खामोशी। सूँघता है। नर्मी से।]

क्लोव !

[लम्बी खामोशी।]

नहीं ? न सही।

[रूमाल निकाल लेता है।]

अगर यही खेल है तो···

[रूमाल खोल लेता है।]

नहीं, तुमने बात को दुहराया, तो आ गई…

[खामोशी। ठीक करता है।]

नहीं, तो हुई बात, दुहराओ फिर अब।

[तरन्नुम से दुहराता है।]

[खामोशी]

मिसरा पूरा नहीं हुआ।

[खामोशी]

और अब?

[खामोशी]

[खामोशी। शिकवा-भरे लहजे में]

बोलो, क्या मेरा बेटा भी मेरे साथ रह सकेगा?

[खामोशी]

मैं बस इसी का इन्तजार कर रहा था।

[खामोशी]

तुम उससे जान नहीं छुड़ाना चाहते? तुम चाहते कि उसे पलता फूलता और अपने-आपको मुरझाता देखो? तुम चाहते हो कि वह तुम्हारे आखिरी दस सात लम्हों में तुम्हारे पास रहे?

[खामोशी]

वह तो बच्चा है, समझता नहीं। उसने अभी देखा ही क्या है? भूख, सर्दी और मौत! लेकिन तुम तो समझदार हो? तुम्हें तो मालूम होना चाहिए कि धरती पर आज-कल क्या हो रहा है। यानि मैंने उसे उसकी जिम्मेदारियों से खूब आगाह किया।

[खामोशी। साधारण लहजे में]

बस, यही हुआ। यही क्या कम है?

[सीटी होंठों तक ले जाता है। झिझकता है।

छोड़ देता है। खामोशी।]

हाँ, सच !

[सीटी बजाता है। खामोशी। और जोर से बजाता है। खामोशी।]

खूब !

[खामोशी]

पिताजी !

[खामोशी, और ऊँची हुई आवाज में]

पिताजी !

[खामोशी]

खूब !

[खामोशी]

हम आ रहे हैं।

[खामोशी]

और आखिरी दाँव ?

[खामोशी]

इसे हटाओ।

[कुत्ते को परे फेंक देता है। सीटी को भी।]

मेरी शुभ कामनाओं सहित।

[सीटी हॉल की तरफ फेंक देता है। खामोशी। सूंघता है। नर्मी से।]

क्लोव !

[लम्बी खामोशी।]

नहीं ? न सही।

[रूमाल निकाल लेता है।]

अगर यही खेल है तो…

[रूमाल खोल लेता है।]

…तो यही सही।

[रूमाल को खोल रहा है।]

…यानि बोलने से कोई फ़ायदा नहीं।

[रूमाल खुल चुका है।]

…तो अब बोलना बन्द।

[रूमाल को सामने फ़ैला कर।]

क्यों भई, घुन-घुस!

[ख़ामोशी]

तुम तो…अभी हो।

[ख़ामोशी। चेहरा रूमाल से ढाँप लेता है, और बाज़ू कुरसी के बाज़ुओं पर टिकाकर पड़ रहता है।]

[थोड़ी देर के अचल दृश्य के बाद पर्दा गिरता है।]

...तो यही सही।

[रूमाल को खोल रहा है।]

...यानि बोलने से कोई फायदा नहीं।

[रूमाल खुल चुका है।]

...सो अब बोलना बन्द।

[रूमाल को सामने फैला कर।]

क्यों भई, घून-घूस!

[खामोशी]

तुम तो...अभी हो।

[खामोशी। चेहरा रूमाल से ढाँप लेता है, और बाजू कुरसी के बाजुओं पर टिकाकर पड़ रहता है।]

[थोड़ी देर के अचल दृश्य के बाद पर्दा गिरता है।]